देशबन्धु

वर्ष –10 I अंक–43 I सागर, मंगलवार 1 अप्रैल 2025 I पृष्ठ–8 I मूल्य – 2.00 रुपए

भूपेन्द्र सिंह ने हर क्षेत्र में खुरई विधानसभा को आगे बढ़ायाः अविराज सिंह पृष्ठ 2

पत्रकारिता में पहुंच बनाती 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' पृष्ठ 4

तकनीक के तनाव : मोबाइल पर जुआ? पृष्ठ 4

नई कृषि उपज मंडी परिसर में 1 करोड़ 98 लाख की लागत से बनाई 20 दुकानों का निर्माण पृष्ठ 6

ईद की नमाज अदा कर मांगी अमन चैन की दुआ, सजदे में झुके सिर पृष्ठ 8

पंजाब के कई जिलों में हुए विरोध प्रदर्शन

किसानों ने मंत्रियों-विधायकों के घरों का घेराव किया

अमृतसर, एजेंसी। पंजाब में किसान मजदूर मोर्चा और संयुक्त किसान मोर्चा (गैर-राजनीतिक) के नेतृत्व में किसानों ने राज्य के 17 जिलों में 35 स्थानों पर विरोध प्रदर्शन किया। पंजाब सरकार के मंत्रियों और विधायकों के घरों के बाहर यह घेराव दोपहर 12 बजे से शाम 4 बजे तक चला। किसान नेता सरवन सिंह पंधेर ने जानकारी दी कि यह प्रदर्शन चार घंटे तक जारी रहा।

किसानों ने अमृतसर के जगदेव कलां गांव में कैबिनेट मंत्री कुलदीप सिंह धालीवाल के घर के बाहर धरना दिया। इस मौके पर किसान नेताओं ने सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की और अपनी मांगें दोहराईं। किसान नेता सरवन सिंह पंधेर ने कहा कि हम विभिन्न जगहों पर सरकार के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि पंजाब सरकार ने खनौरी और शंभू बॉर्डर पर किसानों पर जुल्म किया। हमारे किसान नेताओं को पीटा गया और इस पर कोई कार्रवाई नहीं हुई। इस वजह से हम विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। उन्होंने पंजाब सरकार के साथ-साथ केंद्र सरकार पर भी निशाना साधा।

सीएम भगवंत मान पर निशाना साधते हुए पंधेर ने कहा कि पहले आप कहते थे कि मोदी सरकार ने रास्ते बंद कर रखे हैं, लेकिन अब वह कह रहे हैं कि रास्ते बंद होने से पंजाब में व्यवसाय को नुकसान हो रहा है। उन्होंने राज्य सरकार से सवाल किया कि बॉर्डर खुल जाने से कितना फायदा हुआ? इसका जवाब दें।

उन्होंने आरोप लगाया कि 20 मार्च को शंभू मोर्चे पर किसान नेता बलवंत सिंह बेहरामके पर लाठीचार्ज करने वाले एसएचओ हरप्रीत सिंह को अब तक बर्खास्त नहीं किया गया है। किसान संगठनों ने इस अधिकारी को तत्काल नौकरी से हटाने की मांग की। किसान नेता सरवन सिंह पंधेर ने कहा कि अमृतसर के जंडियाला विधानसभा क्षेत्र में कैबिनेट मंत्री हरभजन सिंह ईटीओ के घर के बाहर भी विरोध प्रदर्शन किया गया। उन्होंने साफ किया कि जब तक सरकार उनकी सभी मांगों को स्वीकार नहीं कर लेती, तब तक यह विरोध प्रदर्शन जारी रहेगा।

किसान नेताओं ने कहा कि केंद्र सरकार से उनकी 12 मांगें हैं, जो एमएसपी गारंटी कानून, कर्ज माफी, और अन्य किसान हितैषी नीतियों से जुड़ी हुई हैं। किसान नेताओं ने पंजाब सरकार से शंभू और खनौरी सीमाओं पर लगाए गए बैरिकेड्स को हटाने और वहां पुलिस कार्रवाई के दौरान किसानों से छीने गए सामान की भरपाई करने की मांग की।

वक्फ बिल पारित कराने की तैयारी में सरकार, रिजिजू बोले-

मुसलमानों को गुमराह किया जा रहा

नई दिल्ली, एजेंसी। केंद्र सरकार संसद में वक्फ संशोधन विधेयक लाने की तैयारी में है। वक्फ संशोधन बिल को 2 अप्रैल को संसद में पेश किया जा सकता है। सरकार पहले लोकसभा में बिल पेश करेगी। सत्र 4 अप्रैल तक चलेगा। संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा कि हम संसद में वक्फ संशोधन विधेयक पेश करने की तैयारी कर रहे हैं। बिल पर संसद के बाहर खूब विचार-विमर्श हुए हैं। हमें सदन में बहस और चर्चा में भी जरूर भाग लेना चाहिए। रिजिजू ने कहा कि बिल पर बनी जेपीसी ने लोकतांत्रिक भारत के इतिहास में अब तक की सबसे ज्यादा परामर्श प्रक्रिया का रिकॉर्ड बनाया है। सभी राजनीतिक दलों से अनुरोध है कि लोगों को गुमराह न करें।

उन्होंने कहा कि भोले-भाले मुसलमानों को यह कहकर गुमराह किया जा रहा है कि सरकार मुसलमानों की संपत्ति और अधिकार छीनने जा रही है। इससे पहले गृह मंत्री अमित शाह ने भी एक बातचीत में इसी सत्र में वक्फ बिल संसद में पेश करने की बात कही थी। शाह ने कहा था कि इस बिल से किसी को भी डरने की जरूरत नहीं है। उन्होंने साफ किया कि आलोचना करना सबका अधिकार है, लेकिन उसका कुछ आधार भी होना चाहिए। बकौल रिजिजू, धार्मिक प्रतिबद्धताओं और मान्यताओं से परे जाकर कई संगठन विधेयक का समर्थन कर रहे हैं।

वक्फ संशोधन विधेयक संविधान पर हमला

वक्फ संशोधन विधेयक पर कांग्रेस सांसद जयराम रमेश ने कहा कि वक्फ (संशोधन) विधेयक संविधान पर सीधा हमला है और इसकी बुनियाद के खिलाफ है। उन्होंने कहा कि हर विपक्षी दल इसका विरोध कर रहा है, लेकिन सवाल यह है कि धर्मनिरपेक्ष पार्टियों जेडी (यू) और टीडीपी का क्या कहना है? उन्होंने कहा कि यह पहली बार था कि समिति में खंड-दर-खंड चर्चा की गई। अगर वे इसे लागू करते हैं, तो हम लोकतांत्रिक तरीके से इसका विरोध करेंगे।

विरोध में काली पट्टी बांधकर नमाज पढ़ी

ईद के दिन देश में कई जगह नमाज अदा करने के लिए मुस्लिम समाज के लोग वक्फ बिल के विरोध में काली पट्टिया बांधकर पहुंचे। रमजान का आखिरी जुमा के दिन 28 मार्च को ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने देशभर के मुसलमानों से काली पट्टी बांधकर नमाज पढ़ने जाने को कहा था।

नई आबकारी नीति लागू

प्रदेश के 19 धार्मिक क्षेत्रों में शराब दुकानें बंद

आधी रात से बंद हुईं 47 दुकानें

भोपाल, देशबन्धु। मध्य प्रदेश में 1अप्रैल से नई आबकारी नीति-2025 लागू हो जाएगी। इस नीति के तहत मोहन सरकार ने 19 धार्मिक क्षेत्रों में शराब दुकानें बंद करने का निर्णय लिया था, जिसके अनुसार 31 मार्च की आधी रात से इन क्षेत्रों की 47 दुकानें बंद कर दी गई हैं।

यहां पर बार और शराब बैठकर पिलाने की व्यवस्था भी बंद होगी। इन इलाकों में शराब और वाइन आउटलेट्स के लिए नए लाइसेंस जारी नहीं किए जाएंगे और न ही इनका संचालन की अनुमति होगी। पिछले दिनों मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की पहल पर राज्य मंत्रिपरिषद ने प्रदेश के पवित्र क्षेत्रों में शराब की ब्रिकी पर रोक लगाने का निर्णय लिया था, जिनमें राज्य के एक नगर निगम, 6 नगर पालिका, 6 नगर परिषद और 6 ग्राम पंचायतें हैं।

इन नगरों में शराब बिक्री पर रोक

नई आबकारी नीति के तहत उज्जैन नगर निगम, ओंकारेश्वर नगर पंचायत, महेश्वर नगर पंचायत, मंडलेश्वर नगर पंचायत, ओरछा नगर पंचायत, मैहर नगर पालिका, चित्रकूट नगर पंचायत, दतिया नगर पालिका, पन्ना नगर पालिका, मंडला नगर पालिका, मुलताई नगर पालिका, मंदसौर नगर पालिका, अमरकंटक नगर पंचायत, सलकनपुर ग्राम पंचायत, बरमान कला ग्राम पंचायत, लिंगा ग्राम पंचायत, बरमान खुर्द ग्राम पंचायत, कुंडलपुर ग्राम पंचायत और बांदकपुर ग्राम पंचायत में शराब बिक्री पर रोक लगा दी गई है।

उज्जैन भैरव मंदिर स्थित दुकान भी होगी बंद

प्रदेश के आबकारी आयुक्त अभिजीत अग्रवाल ने कहा कि प्रदेश की 19 धार्मिक क्षेत्रों की 47दुकानें 1 अप्रैल से बंद हो जाएगी। इसके साथ ही इन क्षेत्रों में संचालित बार भी बंद होंगे। उज्जैन के भैरव मंदिर परिसर में भी शराब की दुकान है, वह भी बंद होगी। भैरव मंदिर में प्राचीन समय से बाबा के दर्शन में मदिरा का भोग लगाने की परंपरा है। लेकिन अब भक्तों को बाहर से शराब लोकर भोग लगाना होगा।

राहुल ने आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की समस्याओं को लेकर लिखा अन्नपूर्णा देवी को पत्र

नई दिल्ली, एजेंसी। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने महिला एवं बाल विकास मंत्री अन्नपूर्णा देवी को पत्र लिख कर आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की समस्याओं का समाधान करने का उनसे आग्रह किया है। श्रीमती अन्नपूर्णा देवी को लिखे पत्र में श्री गांधी ने आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की समस्याओं पर उनका ध्यान आकर्षित करते हुए कहा 'आंगनवाड़ी बहनों का भुखमरी, कुपोषण और कोविड के खिलाफ लड़ाई में अहम योगदान है इसलिए, सरकार से तीन कदम उठाने का अनुरोध किया है।' उन्होंने कहा 'आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के मानदेय के केंद्रीय योगदान में बढ़त हो और सेवानिवृत्त श्रमिकों और सहायकों को ग्रेच्युटी मिले तथा उनकी कार्य स्थितियों और सामाजिक सुरक्षा में सुधार हो।'

नवरात्रि पर विशेषः बुंदेलखंड का प्रसिद्ध क्षेत्र है अबार माता का दरबार

डकैतों की माता कहा जाता हैं मां अबार की माता को

सागर, देशबन्धु। बुंदेलखंड का प्रसिद्ध क्षेत्र है अबार माता का दरबार बुंदेलखंड का अबार माता तीर्थक्षेत्र ऐसा क्षेत्र है, जहां हर भक्त की मनोकामना पूर्ण होती है। बुंदेलखंड के डकैतों के अलावा आल्हा ऊदल जैसे वीरों की मनोकामना अबार माता ने पूर्ण की है। बुंदेलखंड और वीरों की सदी यानी 12 वीं सदी में पृथ्वीराज चौहान को चौकाने वाले आल्हा ऊदल की कहानी इस मंदिर की स्थापना से जुड़ी हुई है। यहां चैत्र नवरात्र में माता की कृपा पाने लोगों का तांता लगता है। बुंदेलखंड के वीर आल्हा ऊदल ने इस मंदिर को बनवाया था। करीब साढ़े 800 साल पहले वे महोबा से माधौगढ़ जा रहे थे। पहुंचने में देर यानि बुंदेली भाषा में अबेर हो जाने पर उन्होंने यहीं बियाबान जंगल में ही अपना डेरा डाल दिया। रात में जब उन्होंने अपनी आराध्य देवी का आह्वान किया तो मां ने उन्हें दर्शन देकर इसी स्थान पर मंदिर बनवाने की प्रेरणा दी। माता की प्रेरणा से उन्होंने यहां चट्टान पर मां की मढ़िया बनावा कर प्रतिमा स्थापित कराई। तभी से यहां मां को अबार माता के नाम जाना जाने लगा। चट्टान के पास गर्भगृह में विराजी अबार माता जगत जननी जगदंबा का ही रूप हैं। बाद में जब यहां गांव बसा तो लोगों ने चट्टान के पास मंदिर बनवाकर उसमें सिद्ध प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा करा दी। किवदंती है कि इस मंदिर में मौजूद एक विशालकाय चट्टान है, जिसका जुड़ाव भगवान शिव से माना जाता है। ऐसी धारणा है यह चट्टान हर महाशिवरात्रि को एक तिल के बराबर विस्तार पाती है, जो वर्तमान में करीब 70 फिट की हो चुकी है। इससे लोगों की आस्था जुड़ी है।

पंचमी व अष्टमी को होता है विशेष श्रंगार

नवरात्रि में अबार माता का हर दिन श्रंगार होता है। पंचमी और अष्टमी को विशेष श्रंगार किया जाता है। वहीं वैसाख माह की नवरात्रि में दस दिन तक विशेष मेला लगता है। हालांकि शारदीय नवरात्रि पर भी मेले जैसा माहौल रहता है, लेकिन वैसाख माह का मेला प्रसिद्ध है।

डकैतों की माता का मंदिर के रहस्य

अबार माता को डकैतों की माता का मंदिर भी कहा जाता है। बुंदेलखंड के दस्यु युग में दुर्दात और खूंखार डाकू इसी मंदिर में माता के दरबार में हाजिरी लगाते थे। जिनमें पूजा बब्बा, मूरत सिंह, देवी सिंह जैसे डकैतों से लेकर ग्वालियर-झांसी के डकैत भी यहां आते थे और माता की आराधना कर मनौती का घंटा चढ़ाते थे। तीन जिलों की सीमाओं से लगा घने जंगली पहाड़ों में बसा यह मंदिर उनके लिये वाकई एक सुरक्षित स्थान था। एक जिले में डकैती डालकर दूसरे प्रदेश या अन्य जिले में चले जाना यहां से आसान था, क्योंकि उत्तर प्रदेश की सीमा भी यहां से लगी हुई है। वहीं चट्टान से बने इस मंदिर की संरचना भी बहुत रोचक और अनोखी है। यहां कोई छिपा हो तो उसे ढूंढ़ना मुश्किल होगा।

छोटा सा पत्थर अपने आप बढ़ते-बढ़ते बनी 70 फीट की चट्टान

पत्थरों और बड़ी-बड़ी भीमकाय चट्टानों से बने इस मंदिर की गहराइयों में कई रहस्य छिपे हैं। ये चट्टानें बड़ी-बड़ी मशीनों से भी हिलाई नहीं जा सकतीं। यहां एक पिलरनुमा चट्टान ऐसी है, जो अपने आप बढ़ती जा रही है। कुछ साल पहले इस चट्टान की चोटी पर माता की छोटी सी मढ़िया बनाकर मूर्ति स्थापित की गई, जिसके बाद इसका बढ़ना रुक गया। अपितु यह बढ़ते-बढ़ते यह 70 फीट की हो गई है।

नवरात्रि में हर दिन आते है 50 हजार से 1 लाख लोग

अबार माता मंदिर में आम दिनों में रोजाना 2 हजार लोग माता के दर्शन के लिये पहुंचते हैं। मंदिर पहुंचने वालो में छतरपुर जिले के अलावा टीकमगढ़, सागर, दमोह के श्रद्धालु भी आते हैं। छतरपुर जिला मुख्यालय से 105 और बड़ामलहरा विकासखंड मुख्यालय से 55 किलोमीटर दूर रामटौरिया के पास अबार माता का मंदिर स्थिति है, जहां जाने के लिए बस, टैक्सी सुविधा उपलब्ध हैं।

मधुमेह एक मेटावोलिक डिस्ऑर्डर है इसे खान पान एवं जीवन शैली सुधारकर ठीक रख सकते हैंः डॉ. पाटिल

सागर, देशबन्धु। अनुयश आरोग्य निदान मुंबई, साक्षी फाउंडेशन एवं श्यामलम् के माध्यम से मधुमेह यानि डायबिटीज पर उचित सलाह का व्याख्यान डॉ. नरेन्द्र पाटिल मुम्बई ने मुख्य वक्ता के रूप में दिया। उन्होंने बताया मधुमेह एक मेटावोलिक डिस्ऑर्डर है इसे खान पान एवं जीवन शैली सुधारकर ठीक रख सकते हैं। ताली बजना, अनुलोम विलोम, ओम उच्चारण, कपाल भाति तथा प्रकृति युक्त खान पान से हम इसपर नियंत्रण रख सकते हैं। वरिष्ठ चिकित्सक आईएमए के पूर्व अध्यक्ष डॉ. श्याम मनोहर सिरोठिया की अध्यक्षता में यह कार्यक्रम हुआ। उन्होंने इस उच्चस्तरीय कार्यक्रम की सराहना की तथा विभिन्न उदाहरण देकर अपनी बात रखी। शहर के वरिष्ठ अस्थिरोग विशेषज्ञ डॉ. मनीष झा ने थ्री डी फार्मूला बताकर शुगर पर लगाम रखने की बात की। डॉ. जीएस चौबे वरिष्ठ अस्थिरोग विशेषज्ञ सागर के आरंभिक उद्बोधन से यह कार्यक्रम शुरू हुआ। उन्होंने बेहतरीन ढंग से विषय प्रतिपादित करते हुये मधुमेह में खान पान पर नियंत्रण की समझाइश दी तथा अपने अनुभव सुनाये। आयोजन की सहयोगी संस्था श्यामलम् के अध्यक्ष उमाकांत मिश्र ने स्वागत भाषण व कार्यक्रम परिचय दिया। आयोजक संस्था साक्षी फाउंडेशन के अध्यक्ष अमीष साक्षी ने शुगर से संबधित अपने अनुभव रखे तथा मुख्यवक्ता डॉ. नरेंद्र पाटिल मुंबई का जीवन परिचय दिया। इस अवसर पर सह आयोजक आदर्श संगीत महाविद्यालय के अध्यक्ष सुभाष कन्डया एवं सचिव डॉ. सिद्धार्थ शंकर शुक्ला ने भी सहयोग दिया। मुंबई से आये चिकित्सा कर्मियों द्वारा कार्यक्रम में लगभग 30 मधुमेह प्रभावितों का परीक्षण कर उन्हें उचित उपचार का परामर्श दिया गया। हिन्दी साहित्य भारती के मीडिया प्रभारी समाजसेवी मुकेश तिवारी ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में डॉ. राजेन्द्र चउदा, प्रो. दिनेश अत्रि, अजय सिंह सोलंकी, संतोष पाठक, कुंदन पाराशर, हरि शुक्ला, कपिल बैसाखिया, रमाकांत मिश्र, अटल फाउंडेशन सचिव डॉ. विनोद तिवारी, दामोदर प्रजापति आदि ने कार्यक्रम में सक्रिय भागीदारी की। अस्सी से अधिक श्रोताओं ने कार्यक्रम को पूरे समय तक रुककर सुना व प्रश्नोत्तरी की। सभी लोगों ने निःशुल्क शर्करा जांच करायी।

आरोपः रुपये न देने पर दुकान बंद कर मारपीट की

व्यापारी बोले शराब पीने वसूली करने पहुंचा व्यक्ति

सागर, देशबन्धु। व्यापारियों से शराब पीने के लिये रुपये मांगने और मारपीट करने का आरोप लगाते हुये सागर के सुरखी थाना क्षेत्र में ग्राम उदयपुरा तिवारी के व्यापारी सकल दिगंबर जैन समाज के लोगों ने शिकायत की है। बताया गया है कि गांव में रहने वाला टीकाराम कुर्मी आये दिन जैन समाज के व्यापारियों से जबरन पैसे की वसूली करता है। शराब पीने के लिये पैसे मांगता है और पैसे न देने पर मारपीट करता है। उनका आरोप है कि लड़ाई झगड़ा करने वाले व्यक्ति के पक्ष में एक पुलिसकर्मी ने भी सहयोग किया। 29 मार्च की शाम करीब 7 बजे टीकाराम आया और दुकानों पर पैसे मांगने लगा। वह कह रहा था कि जब तक मेरा प्रधानमंत्री आवास नहीं बन जाता, तब तक तुम लोगों की दुकानें नहीं खुलेंगी। उसने दुकानों के शटर बंद कर दिये। सुनील पिता ताराचंद जैन, नीतेश पिता निर्मलचंद्र जैन ने उसे रोका तो उसने मारपीट शुरू कर दी। मारपीट में सुनील और निर्मल जैन घायल हुये, जिसके बाद वह भाग गया। रात करीब 12 बजे दोबारा कुल्हाड़ी हाथ में लेकर आया और गालीगलौज कर जान से मारने की धमकी देने लगा। विवाद करते देख पुलिस को सूचना दी। डायल.100 आई तो सायरन सुनकर वह भाग गया। पुलिस को घटनाक्रम की जानकारी दी, जिसके बाद ढाना पुलिस चौकी से आये प्रधान आरक्षक ने हम लोगों को डांटा और गुंडागर्दी कर रहे टीकाराम का पक्ष लिया। व्यापारियों ने इस मामले में जांच कर दोषी के खिलाफ कार्यवाही की मांग की है। इस दौरान राजेश जैन, सुनील जैन, प्रेमचंद्र जैन, नीतेश, अंकित, विनोद जैन आदि मौजूद थे।

श्री दिगम्बर जैन महिला महा समिति की राष्ट्रीय बैठक का हुआ आयोजन

सागर, देशबन्धु। श्री दिगम्बर जैन महिला महासमिति की राष्ट्रीय बैठक का आयोजन भोपाल में किया गया। बैठक के प्रथम सत्र की शुरुआत दीप प्रज्जवल के साथ हुई, बैठक की अध्यक्षता राष्ट्रीय अध्यक्ष मणीन्द दिल्ली एवं शीला जैन डोंडिया जयपुर ने की। बैठक में पांच राज्यों के आंचलिक पदाधिकारी एवं राष्ट्रीय कार्यकारिणी के पदाधिकारी शामिल हुये। सागर से संध्या सिंघई राष्ट्रीय संगठन मंत्री एवं रेखा जैन अहिंसा राष्ट्रीय प्रचार मंत्री, कल्पना जैन, प्रीति जैन शामिल हुई। बैठक का उद्देश्य महासमिति को राष्ट्र की सर्वोच्च संस्था बनाना, विभिन्न योजनाओं हेतु कमेटियों का गठन जिसमें पुरुषों को भी सम्मिलित करना, साधर्मी सहायता हेतु ध्रुव फंड बनाना, सर्वोच्च तीर्थ, निर्वाण स्थली की देखभाल करना है। अंत में सभी राष्ट्रीय पदाधिकारी ने भोपाल संभाग द्वारा आयोजित सफल आयोजन पर बधाई दी। आभार प्रदर्शन इन्दु गांधी एवं रिचा नागपुर ने किया।

भूपेन्द्र सिंह ने हर क्षेत्र में खुरई विधानसभा को आगे बढ़ायाः अविराज सिंह

खुरई, देशबन्धु। सोमवार को युवा नेता अविराज सिंह खुरई विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत हीरो क्रिकेट क्लब द्वारा आयोजित लवकुश क्रिकेट प्रतियोगिता के शुभारंभ कार्यक्रम में सम्मिलित हुये। अविराज सिंह ने ऑफिसर्स कॉलोनी स्थित विधायक कार्यालय में भाजपा के पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं और युवा साथियों से आत्मीय भेंट की। उन्होने क्षेत्रवासियों की समस्यायें सुनीं और उनके समाधान के लिये संबंधित अधिकारियों को सूचित किया। उन्होंने कहा कि आपके भूपेन्द्र सिंह ने जबसे खुरई विधानसभा क्षेत्र में क्रिकेट टूर्नामेंट आयोजित करना शुरू किया है, तब से युवा साथियों में एक उत्साह बढ़ा है। उनका प्रयास है ज्यादा से ज्यादा युवा साथी इस टूर्नामेंट से जुड़े और खेल के क्षेत्र में आगे बढ़े। हम देखते है कि भारत के इतिहास में और भारत की आजादी में सबसे ज्यादा योगदान युवाओं का रहा है। देश के युवाओं ने ही सपना देखा है कि भारत पुनः विश्व गुरू बनें। जैसे भूपेन्द्र सिंह ने हर क्षेत्र में खुरई क्षेत्र विधानसभा को आगे बढ़ाया है। मेरा भी यही सपना है कि खुरई विधानसभा क्षेत्र के युवा साथी हर क्षेत्र में निरंतर आगे बढे। क्योंकि स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था कि उठें जागे परिश्रम करें और तब तक न रुकें जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाये। उन्होंने नवरात्रि के पावन पर्व पर किला प्रांगण खुरई में स्थित मां बिजासन माता मंदिर में छप्पन भोग अर्पण किये एवं माता रानी की आरती में सम्मिलित होकर धर्म लाभ उठाया।

जल गंगा संवर्धन अभियान, अंतर्गत बीना नदी की सफाई की

राहतगढ़, देशबन्धु। जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत मप्र जन अभियान परिषद की नवांकुर संस्था प्रतिभा समाज उत्थान एवं विकास शिक्षा प्रसार समिति एवं वैष्णवी ग्राम विकास समिति द्वारा बीना नदी के घाट पर जाकर सफाई अभियान चलाया गया। मप्र जन अभियान परिषद द्वारा संचालित मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास पाठ्यक्रम की लगने वाली कक्षा में छात्र-छात्रों से जल गंगा संवर्धन के बारे में बताया इसके पश्चात छात्र-छात्राओं को शपथ दिलाई गई। कार्यक्रम में विकासखंड समन्वयक हरिराम अहिरवार ने जल गंगा संवर्धन अभियान के बारे में विस्तार से बताया और उसके महत्व को बताते हुये जल ही जीवन है, जीवन पहलुओं में जल का किस प्रकार उपयोग हैं, सामाजिक संस्कारों में रीति रिवाज में जल का महत्व एवं जल की आवश्यकता और उसके उपयोगिता के बारे में बताया। समिति अध्यक्ष विकास दीक्षित ने जल के महत्व को बताते हुये कहा कि बिना जल के मनुष्य का जीवन असंभव है। समिति अध्यक्ष शैतान सिंह राजपूत ने सभी छात्रों को शपथ दिलाई एवं पानी को व्यर्थ उपयोग न करने के लिये कहा। कार्यक्रम में अशोक पटेल, परामर्श दाता शरद भारद्वाज, सौरभ गोस्वामी, समीक्षा सोनी, राजीव नामदेव,, मोहित कोरी ने भी अपने विचार छात्रों के बीच साझा किये।

विधायक ने शोकाकुल परिवार को संबल प्रदान किया

सागर, देशबन्धु। सोमवार को विधायक प्रदीप लारिया ने विधानसभा अंतर्गत ग्राम सानोधा पहुंचकर अरुण अहिरवार एवं परिजनों से भेंटकर शोक सांत्वना व्यक्त कर संबल प्रदान किया। विगत दिनों बीएमसी सागर में अरुण अहिरवार की 18 माह की बच्ची का इलाज के दौरान जलने से निधन हो गया था। विधायक में परिजनों को हरसंभव मदद करने एवं घटना की निष्पक्ष जांच कराने के लिये आश्वस्त किया। इस अवसर पर परिजन एवं ग्रामवासी उपस्थित थे।

नपा में टैक्स जमा करने के दौरान सर्वर डाउन, आज से दोगुना भरना होगा कर

बीना, देशबन्धु। नगर पालिका में बकाया संपत्ति कर जमा करने वालों की भीड़ उमड़ी वजह है 1 अप्रैल से बकाया कर पर दोगुना शुल्क लगने की नई नीति। कर जमा करने आये महेंद्र साहू ने कहा कि यहां बार-बार सर्वर डाउन हो रहा है। एक ही काउंटर है, जिस पर लोग टैक्स जाम करने आ रहे हैं। इससे हम सभी परेशान हैं। सीएमओ ने कहा है कि कैश जमा कर दो। मप्र सरकार ने निर्णय लिया है कि बकाया संपत्ति कर को व्यावसायिक श्रेणी में रखा जायेगा। इसके तहत एक अप्रैल से बकाया राशि पर दोगुना कर वसूला जायेगा। शहर के लोगों पर साढ़े 6 करोड़ रुपये से अधिक की राशि बकाया है। नगर पालिका ने लोगों को मैसेज भेजकर कर जमा करने की सूचना दी है। इस नई नीति की जानकारी मिलते ही बड़ी संख्या में लोग नगर पालिका कार्यालय पहुंचें। नागरिकों की सुविधा के लिये कार्यालय छुट्टी के दिनों में भी खुला रखा गया। राजस्व शाखा प्रभारी अनिल कटारिया के अनुसार कर्मचारी रात 10 बजे तक काम कर रहे हैं। राजस्व की टीम लगातार कर वसूली के लिये प्रयासरत है। पहले लोग कर जमा करने के प्रति उदासीन रहते थे, लेकिन अब दोगुने कर के नियम ने उन्हें कार्यालय की ओर खींच लाया है।

बोर्ड परीक्षा की अब तक 86 हजार से अधिक उत्तर पुस्तिकाओं का हुआ मूल्यांकन

सागर, देशबन्धु। माध्यमिक शिक्षा मंडल की कक्षा दसवीं एवं बारहवीं की बोर्ड परीक्षाओं का मूल्यांकन शास. उत्कृष्ट विद्यालय सागर में चल रहा है इस मूल्यांकन कार्य में अब तक दो चरणों में 86 हजार से अधिक उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन किया जा चुका है। कलेक्टर संदीप जीआर के निर्देशानुसार मूल्यांकन कार्य के लिये जिला शिक्षा अधिकारी अरविंद जैन के द्वारा सभी आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित कराई गई है जिसके तहत मूल्यांकन कार्य करने के पूर्व सभी मूल्यांकन करने वाले शिक्षकों को प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। प्रशिक्षण के उपरांत ही मूल्यांकन का कार्य करने की अनुमति प्राप्त होती है। समन्वय संस्था के प्राचार्य सुधीर तिवारी ने बताया कि माध्यमिक शिक्षा मंडल की निर्देशों का अक्षरशः पालन कराया जा रहा है और मूल्यांकन कार्य का सीसीटीवी कैमरे के माध्यम से लगातार मॉनिटरिंग भोपाल स्तर पर की जा रही है। चौथे चरण का मूल्यांकन 8 अप्रैल से प्रारंभ होगा। प्रथम चरण में कक्षा दसवीं की हिंदी, आईटी, विषय का मूल्यांकन किया जा चुका है, जबकि कक्षा बारहवीं की हिंदी एवं अंग्रेजी का मूल्यांकन संपन्न किया गया है। उन्होंने बताया कि इसी प्रकार दूसरे चरण में कक्षा दसवीं की अंग्रेजी संस्कृत एग्रीकल्चर एवं फिजिकल एजुकेशन का मूल्यांकन भी समाप्ति की ओर है। कक्षा दसवीं में 45 हजार 920 उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन 90 से अधिक मूल्यांकन कर्ता शिक्षकों के द्वारा किया गया है। कक्षा 12 वीं में अब तक 40 हजार 80 उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन किया जा चुका है इस मूल्यांकन कार्य में 149 शिक्षकों ने कार्य किया है। सोमवार से तीसरे चरण का मूल्यांकन भी 100 शिक्षकों के द्वारा प्रारंभ किया गया है इस प्रकार अब तक 350 से अधिक शिक्षकों द्वारा मूल्यांकन कार्य किया जा रहा है।

विधायक ने रेल्वे गेट नंबर 28 पर चल रहे निर्माण कार्य को 30 अप्रैल तक पूर्ण कराने लिखा पत्र

सागर, देशबन्धु। मकरोनिया-झांसी रोड पर स्थित रेलवे गेट नंबर 28 पर बहुप्रतीक्षित रेलवे ओवर ब्रिज बीते 7 सालों से निर्माणाधीन है लेकिन अब तक इसका निर्माण कार्य पूरा नहीं हो सका है। निर्माण की धीमी गति के कारण यह ब्रिज कछुआ चाल से आगे बढ़ रहा है जिससे क्षेत्र सहित जिले के लोगों को भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। इस संदर्भ में विधायक प्रदीप लारिया ने रेलवे मंडल प्रबंधक, पश्चिम मध्य रेलवे, जबलपुर, कलेक्टर और कार्यपालन यंत्री, सेतु निर्माण संभाग, सागर को रेलवे गेट नंबर 28 पर चल रहे निर्माण कार्य को 30 अप्रैल तक पूर्ण कराने पत्र लिखा। पत्र में उल्लेख किया है कि अनेकों बार उनके द्वारा एवं जिला प्रशासन द्वारा समय-समय पर निर्माण कार्य का निरीक्षण किया गया। अनेकों बार कार्य पूर्णता की तिथियां बढ़ाई गई। अधूरे निर्माण से जनता को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। मकरोनिया एवं सदर के नागरिकों, विद्यार्थियों एवं सैन्यजनों को लगभग 7-8 किलोमीटर से अधिक का चक्कर लगाकर आना-जाना पड़ता है जिससे उनका अर्थ एवं समय व्यय हो रहा है। विधायक के द्वारा 8 मार्च को उक्त निर्माण कार्य के निरीक्षण के दौरान कार्य एजेंसी द्वारा 30 अप्रैल तक कार्य पूर्ण करने की डेट लाइन दी गई। इस निर्माण कार्य में लंबा समय व्यतीत होने के कारण जनता के धैर्य की प्रतीक्षा समाप्त हो गई है। जनमानस में इस अधूरे निर्माण कार्य को लेकर आक्रोश व्याप्त है। जनता में व्याप्त आक्रोश को दृष्टिगत रखते हुये अन्य कोई अप्रिय स्थिति निर्मित न हो इस हेतु निर्माण एजेंसी को 30 अप्रैल तक रेलवे गेट नंबर 28 के अधूरे निर्माण कार्य को पूर्ण कराने अधिकारियों से सख्त निर्देश प्रसारित कराने लेख किया गया है।

बीना रिफाइनरी के मैनेजर से 1 करोड़ की धोखाधड़ी

बीना, देशबन्धु। बीना रिफाइनरी में कार्यरत मैनेजर मनीष सिंह के साथ शेयर मार्केट में बड़ी साइबर ठगी हुई है। ठगों ने उनसे एक करोड़ से अधिक की रकम हड़प ली। इस मामले में 29 मार्च को केस दर्ज किया गया। मनीष सिंह 2007 से बीना रिफाइनरी में मैनेजर के पद पर कार्यरत हैं। वे पिछले 9 सालों से शेयरखान एप के जरिये ऑनलाइन ट्रेडिंग कर रहे थे। 9 जनवरी को उन्हें एक व्हाट्सएप गुप शेयर खान शुभ लाभ परिवार में जोड़ा गया। इस ग्रुप के एडमिन मनोज जोशी, सान्वी अग्रवाल और दो अन्य लोग थे। मनोज जोशी ने खुद को शेयरखान एप का वित्तीय विश्लेषक बताया। उसने मनीष को क्वालिटी स्टॉक और आईपीओ में निवेश की सलाह दी। मनीष ने 11 फरवरी से 7 मार्च के बीच पांच अलग-अलग कंपनियों में कुल 1 करोड़ 7 लाख रुपये का निवेश किया। मैनेजर इन कंपनियों में किया निवेश जिसमें चामुंडा इलेक्ट्रिकल्स में 6 लाख, केन इंटरप्राइजेज में 14.88 लाख, एजेक्स इंजीनियरिंग में 32.33 लाख, क्वालिटी पावर इलेक्ट्रिकल में 94.55 लाख, बालाजी फॉस्फेट में भी निवेश किया। प्राफिट भी दिखाया गया। 22 मार्च को शेयरखान एज एप पर उन्हें प्रॉफिट सहित 3 करोड़ 71 लाख रुपये दिखाये गये। जब उन्होंने 40 लाख रुपये निकालने की कोशिश की, तब धोखाधड़ी का पता चला। मनोज जोशी का फोन बंद मिला और कस्टमर केयर से भी कोई जवाब नहीं मिला। आगासौद थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस के अनुसार मनीष को इस डेढ़ माह की अवधि में जो प्रॉफिट दिखा, उसे वहीं इन्वेस्ट भी किया है। जब प्रॉफिट निकालने लगे तब ठगी का पता चला। थाना प्रभारी नितिन पाल के अनुसार बीना क्षेत्र में इस तरह का यह पहला मामला है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

स्वर सारंग कार्यक्रम में हुई गजल और गीतों की शानदार प्रस्तुति

सागर, देशबन्धु। संभावना समग्र विकास समिति सागर द्वारा शनिवार को शाम 7 बजे से रविंद्र भवन में स्वर सारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रस्तुत किये गये गजल व गीतों का उपस्थित दर्शकों ने भरपूर आनंद लिया। संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार एवं संगीत नाटक अकादमी नई दिल्ली के सहयोग से आयोजित स्वर सारंग कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जनसंपर्क के सेवानिवृत्त उप संचालक एवं श्रोता समाज सागर के अध्यक्ष डॉ. अशोक कुमार तिवारी, विशिष्ट अतिथि के रूप में लोकशिक्षण विभाग सागर के संयुक्त संचालक डॉ. मनीष वर्मा उपस्थित रहे, अध्यक्षता इंक मीडिया के निदेशक डॉ. आशीष द्विवेदी ने की। कार्यक्रम के आरंभ में अतिथियों ने मां सरस्वती का पूजन किया तत्पश्चात आयोजक संस्था संभावना समग्र विकास समिति के ओर से निर्देशक डॉ. अतुल श्रीवास्तव एवं कार्यक्रम संयोजक रचना तिवारी आदि ने अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर अतिथियों ने अपने उद्बोधन में कार्यक्रम की सराहना करते हुये कहा कि आज के भागमभाग भरे जीवन में हर व्यक्ति हमेशा ही कुछ पल मनोरंजन और शांति के चाहता है। संभावना समग्र विकास समिति ने फूहड़ता से दूर यह कार्यक्रम प्रस्तुत कर लोगों की इस जरूरत को पूरा करने का प्रयास किया है जो एक अच्छी पहल है और ऐसे आयोजन सतत जारी रहना चाहिये ताकि लोगों को साफ सुथरा मनोरंजन मिलता रहे। कार्यक्रम में सागर के सुपरिचित गायक मितेंद्र सिंह सेंगर और स्तुति खम्परिया ने अलग-अलग गजल गीतों के साथ ही युगल रूप से भी गीत व गजलों की सुमधुर प्रस्तुतियां दीं। कलाकारों की इन प्रस्तुतियों पर दर्शकों ने अपनी तालियों के साथ ही मुक्तकंठ से उनकी सराहना की। कार्यक्रम में संगीत संयोजन अर्पित तिवारी और शैलेंद्र सिंह राजपूत व उनके साथी कलाकारों का रहा। कार्यक्रम संयोजक रचना तिवारी का रहा। मंच संचालन डॉ. रविंद्र टांक द्वारा किया गया व मंच सज्जा का कार्य राजीव जाट ने देखा। कार्यक्रम में प्रस्तुतियों के दौरान हरगोविंद विश्व, लक्ष्मी नारायण चौरसिया, शिवरतन यादव, उमाकांत मिश्र, डॉ. आशुतोष गोस्वामी, डॉ. मनोज श्रीवास्तव, आरके तिवारी, डॉ. गजाधर सागर, सतीश साहू, नवीन कांगो, मासूम आलम, असरार अहमद सहित नगर के अनेक कला सुधि दर्शक उपस्थित रहे।

सार समाचार

तालगांव से किया जल गंगा संवर्धन अभियान शुरु

खजुराहो, देशबन्धु। विधायक अरविंद पटेरिया ने ग्राम पंचायत तालगांव के सुख सागर तालाब की सफाई करके जल गंगा संवर्धन अभियान की शुरुआत की है। विधायक ने साकेत धाम मंदिर परिसर में लोगों के साथ झाड़ू लगाकर साफ रहने का संदेश दिया। उन्होंने ग्रामीणों को जल संरक्षण एवं संवर्धन के बारे में प्रेरित भी किया। समस्त ग्रामवासियों से अपने-अपने खेतों में खेत तालाब एवं गांव में निर्मित पुरानी जल संरचनाओं के संरक्षण हेतु सहयोग करने की अपील की गई। इस अवसर पर जनपद उपाध्यक्ष पुष्पेंद्र अवस्थी सीईओ राकेश शुक्ला, पंचायत के सरपंच मनोज पटेल, उपयंत्री, पीसीओ, पंचायत सचिव सहित बड़ी संख्या में ग्रामवासी उपस्थित रहे।

9 माह की बच्ची की सर्पदंश से मौत

छतरपुर, देशबन्धु। ईशानगर थाना क्षेत्र के ग्राम बौंड़ा में बीती रात एक जहरीले सांप ने 9 माह की बच्ची को काट लिया, जिससे उसकी मौत हो गई है। बौंड़ा निवासी मूलचंद्र अहिरवार ने बताया कि उसके पुत्र बलदाऊ अहिरवार की 9 माह की बेटी पूर्वी अहिरवार अपनी मां मनीषा के साथ घर में सो रही थी। रात करीब 3 बजे कमरे में आए एक जहरीले सांप ने उसे काट लिया। घटना के बाद परिजन आनन-फानन में बच्ची को ईशानगर अस्पताल लेकर गए लेकिन वहां कोई डॉक्टर नहीं मिला। इसके बाद परिजन निजी वाहन से बच्ची को जिला अस्पताल लाए, जहां चिकित्सकों ने बच्ची को मृत घोषित कर दिया है।

खेरमाता मंदिर में धर्मशाला के लिए किया भूमिपूजन

बक्सवाहा, देशबन्धु। नगर के वार्ड क्रमांक 10 स्थित खेरमाता मंदिर परिसर में सार्वजनिक धर्मशाला निर्माण के लिए भूमि पूजन किया गया।

यह धर्मशाला श्री हरिराम राय (निमानी वाले) द्वारा अपने पिता स्व. लीलाधर राय की स्मृति में बनवाई जा रही है। निर्माण पूर्ण होने के बाद इसे खेरमाता मंदिर समिति को सौंप दिया जाएगा। भूमिपूजन कार्यक्रम में हरिराम राय, नरेन्द्र राय, परिवारजन एवं जय माँ शारदा युवा मंडल के सदस्य उपस्थित रहे। साथ ही, खेरमाता मंदिर समिति के अध्यक्ष पं. संजय दुबे, कोषाध्यक्ष देवेंद्र पाण्डेय, सचिव सुरेंद्र प्रजापति, पुजारी प्रमोद दुबे, सदस्य सुरेश राय, भीम नामदेव, हिम्मत राजा, कन्हैया पटेल, सूटर पटेल, हल्लाई राय, भूरे राय, अरविंद पटेल एवं अन्य कार्यकर्ता भी मौजूद थे। बताया गया है धर्मशाला निर्माण से मंदिर आने वाले श्रद्धालुओं को सुविधा मिलेगी और धार्मिक व सामाजिक कार्यों के आयोजन में सहयोग मिलेगा।

गदा से ताबड़तोड़ प्रहार कर पिता की हत्या, चचेरा भाई घायल

छतरपुर, खजुराहो, देशबन्धु। जिले के खजुराहो थाना क्षेत्र के ग्राम भरवा में सोमवार को सुबह एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है। दरअसल यहां 30 वर्षीय रामपाल ने हनुमान मंदिर से गदा उठाकर अपने 55 वर्षीय पिता मनकू पाल पर प्रहार करके उनकी हत्या कर दी और 25 वर्षीय चचेरे भाई को भी बुरी तरह से घायल कर दिया है। हत्या करने के बाद आरोपी पुत्र पिता के शव के पास बैठकर चिल्लाता रहा मैं तेरा खून पी जाउंगा।

जानकारी के अनुसार मनकू पाल के तीन पुत्र हैं, उनमें से एक है रामपाल पाल जो मानसिक रूप से विक्षिप्त है। उसका इलाज चल रहा है, गर्मी शुरु होते ही उसका मानसिक संतुलन बिगडने लगता है। पुश्तैनी जमीन के बंटवारे को लेकर रामपाल का अकसर अपने पिता मनकू से विवाद होता रहता था। वो चाहता था कि उसके दादा के नाम वाली जमीन उसे ही मिले। दिमागी बीमारी के कारण घर के लोग उसे अकसर बांधकर रखते थे। सोमवार को सुबह अचानक रामपाल को सनक आई और वह नहाकर सीधे हनुमान मंदिर गया। वहां से गदा लेकर बाहर आया और पिता पर ताबड़तोड़ प्रहार करके उसकी निर्मम हत्या कर दी। चाचा को बचाने आए चचेरे भाई महेश पाल को भी उसने बुरी तरह से घायल कर दिया है। ये नजारा देखकर ग्रामीणों ने आरोपी रामपाल को काबू में करके उसके हाथ-पैर बांध दिए। गंभीर घायल महेश को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। इस हृदयविदारक घटना का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ है, जिसमें पिता के शव के पास बैठे आरोपी पुत्र रामपाल के दोनों हाथ बंधे हैं, वह पिता का खून पीने की बात कर रहा है।

इनका कहना है

ग्राम भरवा में सोमवार को 55 साल के मनकू पाल की हत्या उसके ही पुत्र रामपाल ने कर दी है। आरोपी पुत्र को पकड़ लिया गया है। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर मामले की जांच की जा रही है।

नवीन दुबे
एसडीओपी, खजुराहो

पुलिस ने अवैध रूप से टैक्टर ट्राली में जा रही शराब को पकड़ा

घुवारा, देशबन्धु। थाना बमनौरा पुलिस को रात्रि रोड पेट्रोलिंग के दौरान भेल्दा तिगड्डा कचरा रोड बमनौरा में अवैध शराब तस्करी की सूचना प्राप्त हुई। पुलिस टीम मौके पर पहुंच कर अस्थाई चेकिंग पॉइंट में संदेह के आधार पर ट्रैक्टर रोका गया, ट्रैक्टर में बैठे 2 लोगों को उतार कर ट्राली जो फसल के पूरे (लाख) से भरी थी, की विधिवत तलाशी ली गई। फसल के नीचे 40 पेटी मात्रा करीब 360 लीटर अवैध शराब पाई गई, अवैध मादक पदार्थ शराब, तस्करी में प्रयुक्त स्वराज 724 ट्रैक्टर, ट्रॉली कुल कीमत करीब 6 लाख रुपए जप्त कर दोनों आरोपियों को अभिरक्षा में लिया गया। पूछताछ पर अवैध शराब के स्रोत रघुवीर यादव से लेना बताया। अवैध मादक पदार्थ में लिप्त दो गिरफ्तार सहित तीन आरोपियों प्रकाश सेन पिता हलके सेन निवासी ग्राम कचरा थाना बमनौरा इमरत पाल पिता तिज्जु पाल निवासी ग्राम कचरा थाना बमनौरा शराब का स्रोत रघुवीर यादव निवासी ग्राम बहादुरपुर थाना बमनौरा के विरुद्ध आबकारी अधिनियम के तहत अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। अभियुक्तों को न्यायालय पेश किया जा रहा है। फरार आरोपी रघुवीर यादव की तलाश एवं विवेचना कार्यवाही जारी है।

उक्त कार्यवाही में एसडीओपी बड़ा मलहरा श्री रोहित अलावा के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी बमनौरा उनि शिशिर तिवारी, सउनि सुनील सिंह, प्र.आर. सरमन लाल, आर. हरीश कुमार, आर. अनिल अहिरवार, आर. लोकेन्द्र रावत की भूमिका रही।

ईद का उल्लास : सामूहिक नमाज के साथ अमन चैन के लिए मांगी दुआ

छतरपुर, देशबन्धु। सोमवार को सुबह शहर के मुस्लिम समुदाय के लोग बड़ी ईदगाह में सामूहिक नमाज में शामिल हुए। सभी ने एक साथ देश में अमनोचैन के लिए दुआ मांगी। इस दौरान पूरे शहर सहित जिले में पुलिस ने कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की गई थी।

दीनी पोशाक में नमाज के बाद लोगों ने एक-दूसरे को गले लगाकर ईद की मुबारकबाद दी। ईदगाह में कलेक्टर पार्थ जायसवाल, एसपी अगम जैन, एएसपी विदिता डागर, सीएसपी अमन मिश्रा सहित कई नेता और समाजसेवी मौजूद थे, जिन्होंने मुस्लिम समाज के लोगों को ईद की मुबारकबाद दी। पूरे दिन शहर में ईद का उल्लास छाया रहा। शहर में गंगा जमनी संस्कृति की अनूठी झलक देखने को मिली। दोपहर से देर रात तक घरों में मीठी सिंवई और अन्य पारंपरिक पकवानों की दावत का क्रम चलता रहा है। कलेक्टर श्री जायसवाल ने बताया पूरे जिले सहित छतरपुर शहर में माहौल शांतिपूर्ण है। हर गली, चौराहे पर पुलिस बल तैनात है। प्रशासनिक अधिकारी भी हर स्थिति पर नजर रखे हुए हैं। एसपी श्री जैन ने बताया जिले के अलग-अलग स्थानों पर इबादत की गई। शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए पूरे जिले में पुलिस बल तैनात किया गया है। सोशल मीडिया पर सायबर सेल की टीम निगाह रखे हुए है।

दो दिन में आधा दर्जन से अधिक आईपीएल सटोरियों को पकड़ा गया

छतरपुर, देशबन्धु। क्रिकेट महाकुंभ कही जाने वाली इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के मुकाबलों को लेकर सक्रिय आधा दर्जन सटोरियों पर पुलिस ने कार्यवाही की है।

लाइन थाना प्रभारी निरीक्षक वाल्मीकि चौबे ने बताया पिछले दो दिनों में तीन स्थानों पर कार्रवाई की है। पहली कार्रवाई पन्ना रोड के वेयरहाउस के पास चाय की टपरी पर की है, जहां आईपीएल के मुकाबलों पर सट्टा लगाया जा रहा था। यहां से आरोपी अनिकेश पुत्र रघुराज अहिरवार निवासी पूजा ढाबा के पास पन्ना रोड छतरपुर को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से मोबाइल फोन और नगद राशि बरामद की गई। दूसरी कार्रवाई में शहर के देरी रोड पर विनेश कुमार पुत्र बद्री प्रसाद बाजपेई को पकड़ा है, जो सट्टा खिला रहा था। उसके कब्जे से दो मोबाइल फोन जप्त किए गए, साथ ही उसके द्वारा दी गई लिंक पर सट्टा खेलने वाले राजा ठाकुर को भी पकड़ा गया है। तीसरी कार्रवाई स्टेडियम के पास संचालित चाय की गुमटी पर करके यादवेंद्र सिंह पुत्र बृषभान सिंह यादव निवासी ग्राम बंधीखुर्द हाल निवास चौबे कॉलोनी छतरपुर को गिरफ्तार किया गया है। उसके कब्जे से मोबाइल फोन जप्त किया गया था। साथ ही उसके माध्यम से सट्टा खेलने वाले हेमंत उर्फ गुरु मिश्रा, आकाश यादव और शिवम यादव पर भी कार्यवाही की गई है। थाना प्रभारी ने बताया सभी सटोरियों के विरुद्ध पब्लिक गैम्बलिंग एक्ट की धाराओं में पृथक-पृथक अपराध दर्ज किए गए हैं।

धूमधाम से मनाया झूलेलाल साईं का जन्मोत्सव

छतरपुर, देशबन्धु। भारतीय सिंधु सभा युवा शाखा एवं सिंधी युवा समिति के संयुक्त तत्वावधान में सिंधी समाज के आराध्य झूलेलाल सांई का जन्मोत्सव (चेटीचंद्र) धूमधाम से मनाया गया।

सिंधी कॉलोनी के श्री झूलेलाल मंदिर में समाज द्वारा दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। सिंधी पंचायत छतरपुर के अध्यक्ष श्याम आडवाणी ने बताया रविवार सुबह श्री बहराणा साहिब में ज्योति प्रज्वलित करके महाआरती के बाद शहर में विशाला शोभायात्रा निकली जो सिंधी गुरुद्वारा से चौक बाजार होते हुए महल रोड स्थित बड़े तालाब पहुंचकर संपन्न हुई।

मंदिर में भगवान झूलेलाल साईं का जलाभिषेक (शाही स्नान), भजन कीर्तन, प्रसाद वितरण, बाहर से आए कलाकारों के सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं लंगर के साथ हुआ। शाम को अन्य कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस मौके पर सिंधी समाज युवा शाखा मीडिया प्रभारी केशव सिंधी, संरक्षक एवं भारतीय सिंधु सभा के प्रदेश उपाध्यक्ष लालचंद लालवानी सहित बड़ी संख्या में समाज की महिलाएं, पुरुष, युवा, बुजुर्ग और बच्चों ने भाग लिया।

दिनदहाडे 2 आपराधिक वारदातों से दहला शहर, पुलिस की कार्यशैली पर उठे सवाल

प्रभात फेरी में शामिल युवकों पर जानलेवा हमला, आरोपी दबोचे

छतरपुर, देशबन्धु। सोमवार को दिनदहाड़े शहर में दो अलग अलग स्थानों पर दो सनसीनखेज आपराधिक वारदातों से शहर के लोग दहल गए। रामनवमी की प्रभात फेरी में पुलिस की मौजूदगी के बावजूद दुस्साहसिक तरीके से तीन युवकों ने छुरा और बका से जानलेवा हमला करके दो युवकों को बुरी तरह से घायल कर दिया। वही एक मकान के विवाद में पन्ना रोड पर तलवार लहराते हुए दो युवकों ने कट्टे से फायरिंग करके दहशत फैलाई है।

श्रीराम सेवा समिति के द्वारा सोमवार को सुबह रोज की तरह शहर में प्रभात फेरी निकाली जा रही थी। सीताराम कॉलोनी की बर्फ फैक्ट्री के पास आदतन अपराधी अभय वर्मा उर्फ बक्कल दादा, डीपी ठाकुर सहित एक अन्य युवक ने प्रभात फेरी में घुसकर साथ चल रहे संजू मिश्रा उर्फ संजू भूरा निवासी छतरपुर पर धारदार छुरा और बका से जानलेवा हमला कर दिया।

अचानक हुए इस हमले वहां भगदड के हालात बन गए। ये नजारा देखकर भाजपा नेता सुरेन्द्र साहू संजू मिश्रा को बचाने के लिए पहुंचे, तभी उन पर भी बका से जानलेवा हमला कर दिया गया। इस हमले में दौनों लोग बुंरी तरह से घायल हो गए। बताते हैं कि बीचबचाव के दौरान एक उपनिरीक्षक प्रदीप शर्मा को भी चोटें आई हैं। मौके पर मौजूद लोगों ने तत्परता से दो आरोपियों को पकडकर पुलिस के सुपुर्द कर दिया, जबकि तीसरा आरोपी भाग गया। जिसे शाम तक कोतवाली पुलिस ने पकड़ लिया है। घायलों को जिला अस्पताल लाया गया, यहां से सुरेन्द्र साहू की हालत नाजुक होने से उसे मेडीकल कालेज ग्वालियर रेफर कर दिया गया है।

सिटी कोतवाली के टीआई अरविंद दांगी ने बताया कि प्रभात फेरी के दौरान विवाद हुआ था, जिसमें दो लोग घायल हुए हैं। फरियादी की शिकायत लेकर आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। मामले की जांच की जा रही है।

भवन पर कब्जा करने पहुंचे युवकों ने की फायरिंग

छतरपुर शहर में ही सिविल लाइन थाने के अंतर्गत पन्ना रोड पर रेडियो कालोनी के पास सोमवार की दोपहर एक भवन पर कब्जे को लेकर दो पक्षों में विवाद हो गया, जिसके बाद एक पक्ष के लोगों तलवार लहराते हुए देसी कटटे से फायरिंग करके दहशत फैला दी। घटना की जानकारी मिलते ही सिविल लाइन थाना पुलिस ने मौके पर जाकर एक युवक को पकड़ लिया है। उससे पूछताछ की जा रही है। जानकारी के मुताबिक रेडियो कॉलोनी के पास स्थित संजू यादव का योगा कुलम भवन उसके परिवार के लोगों द्वारा उसकी सहमति के बिना ही पुष्पेन्द्र पटेल को बेच दिया था। इसके बाद संजू यादव ने न्यायालय की शरण ली, जहां ये मामला विचाराधनी है। सोमवार की दोपहर करीब डेढ़ बजे पुष्पेन्द्र पटेल अपने कुछ साथियों के साथ इस भवन पर कब्जा करने के लिए वहां जा पहुंचा। वहां संजू यादव के परिवार की एक महिला से उसकी कहासुनी के बाद अचानक कटटे से फायरिंग करके दहशत फैला दी गई। फायरिंग होते ही वहां हड़कंप मच गया और पुलिस को सूचना दी गई। सिविल लाइन थाना प्रभारी वाल्मीकि चौबे ने बताया मौके से एक व्यक्ति को पकड़कर पूछताछ की जा रही है। इसके बाद मामला पंजीबद्ध किया जाएगा। बहरहाल इन दोनों मामलों से आमजन में शहर में बढती आपराधिक वारदातों के कारण भय पैदा हो गया है। निरंकुश अपराधियों की बढ़ती सक्रियता से पुलिस की भूमिका पर भी सवाल उठने लगे हैं।

मेकअप में प्रेरणा सागर अव्वल, सौम्या और संजना रहीं बेस्ट ड्रेस डिजाइनर

छतरपुर, देशबन्धु। शहर के एक होटल में मेकअप प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें डेढ़ दर्जन से अधिक प्रतिभागियों ने सहभागिता की। आयोजक मोना सिंह राजपूत ने बताया प्रतियोगिता के मुख्य अतिथि क्रमिक यादव मिस्टर इंडिया-2022 रहे। विशिष्ट अतिथि छतरपुर की पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष अर्चना सिंह थीं। इस प्रतियोगिता में संभाग के जिलों की 20 से अधिक युवतियों ने भाग लिया। मेकअप प्रतियोगिता में प्रेरणा सागर ने प्रथम स्थान हासिल किया, जबकि सौम्या और संजना को बेस्ट ड्रेस डिजाइनर चुना गया। सौम्या और संजना ने अपनी मॉडल को हम आपके हैं कौन फिल्म में अभिनेत्री माधुरी दीक्षित द्वारा पहनी गई ड्रेस की तर्ज पर तैयार किया था, जिसकी सभी ने सराहना की।

चोरी की योजना बनाते अंतरराज्यीय गिरोह के 5 सदस्य गिरफ्तार

हरपालपुर, देशबन्धु। कस्बे में रात्रि गस्त के दौरान मुखबिर से मिली सूचना पर पुलिस ने रेलवे स्टेशन के गोदाम के पास से चोरी की योजना बनाते हुए 5 लोगों को पकड़ा है। ये सभी अंतरराज्यीय चोर गिरोह के सदस्य हैं। टीआई पुष्पक शर्मा ने बताया सभु आरोपी एक ताला लगे घर में चोरी करने की योजना बना रहे थे।

ये वारदात को अंजाम दे पाते उसके पहले ही पांचों को पकड़ लिया गया है। पकड़े गए आरोपियों में राजपूत पिता पन्ना राजपूत निवासी पराखेरा थाना राठ जिला हमीरपुर उत्तरप्रदेश मुख्य है, जिस पर राज्य में कुल 7 चोरी व लूट के अपराध दर्ज है। प्रिंस राजपूत पिता प्रदीप राजपूत निवासी ब्यावल खटोला थाना सरसई जिला दतिया मध्य प्रदेश जिसके विरुद्ध 3 चोरी के मामले दर्ज हैं। धनपत पिता देवीदीन अनुरागी निवासी सरीला थाना जरिया जिला हमीरपुर उत्तरप्रदेश जिसके विरुद्ध पूर्व में 2 अपराध दर्ज है। अरुण पिता छविलाल राजपूत निवासी पठा थाना मऊरानीपुर पर 2 अपराध और विशाल पिता सन्तोष आर्य निवासी चकारा थाना लहचुरा जिला झांसी उत्तरप्रदेश हैं। इनके विरुद्ध मामला दर्ज करके न्यायालय में पेश किया, वह्नान से सभी को जेल भेज दिया गया है। इस कामयाबी में एसआई अरविंद यादव, प्रधान आरक्षक राकेश अहिरवार, आरक्षक पुष्पेंद्र, संदीप, दिनेश, पुष्पेंद्र, मनोज और भानसिंह की भूमिका खास रही है।

माता वैष्णोदेवी के अंश के रुप में पूजी जाती हैं मां अर्द्धकुंमारी

महाराजपुर, देशबन्धु। चैत्र नवरात्र के दौरान शिवसागर तालाब के किनारे मां वैष्णो देवी के अंश रुप में विराजीं अर्द्धकुंवारी माता के दर्शनार्थ हजारों देवी भक्त पहुंच रहे हैं। ये स्थान देवी भक्तों के लिए श्रद्धा और आस्था का केन्द्र है।

मंदिर के प्रमुख पुजारी दीपू महाराज बताते हैं कि सात पीढ़ियों से उनका परिवार देवी मां के श्री चरणों में सेवाएं दे रहा है। मां का आर्शीवाद लेने के लिए यहां दूरदूर से श्रद्धालु आकर पूजा अर्चना करके मनौती मांगते हैं। चैत्र और शारदेय नवरात्र के दौरान यहां आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या और बढ़ जाती है। इन दिनों देवी मां के सम्मुख खप्पड़ की स्थापना की जाती है। नवमी के दिन जवारों का पूजन करके विधिविधान से शिवसागर तालाब में विसर्जित किया जाता है।

ऐसी मान्यता है कि देवी भक्त मां का आर्शीवाद लेकर ही कोई भी शुभ कार्य शुरु करते हैं। नवविवाहित वर-वधु भी सबसे पहले देवी मां के दरबार में हाथे लगाकर ही नया जीवन शुरु करते हैं। नवरात्र के दौरान मंदिर में प्रतिदिन कन्या भोज का आयोजन किया जा रहा है।

सीबीएसई ने दिया प्रशिक्षण : महर्षि विद्या मंदिर के शिक्षकों ने बताए नई शिक्षा नीति के नवाचार

छतरपुर, देशबन्धु। *महर्षि विद्या मंदिर में सीबीएसई दिल्ली द्वारा एक दिवसीय शिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें शिक्षकों को नई शिक्षा नीति के अनुसार तैयार करने और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के नवाचारों की जानकारी दी गई। इस प्रशिक्षण में 56 शिक्षकों ने भाग लिया है।*

प्रशिक्षण शिविर के निर्देशक महर्षि प्राचार्य सीके शर्मा ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के संसाधन प्रवक्ता डॉ निर्केश शर्मा वाइस प्रिंसिपल जीडी गोयंका पब्लिक स्कूल ग्वालियर और परविन्दर कौर सेंट जोसेफ कॉन्वेंट स्कूल सागर का स्वागत किया। विशेषज्ञों ने बताया नई शिक्षा नीति के अनुसार कक्षाओं का वर्गीकरण किस तरह से बच्चों को उत्कृष्टता प्रदान करेगा। उच्च कक्षाओं में सामान्य विषयों के अध्ययन के साथ किस तरह से बच्चे खुद को रोजगार परक विधाओं में निपुण बना सकेंगें। उन्होंने नई शिक्षा नीति में बाल्यावस्था से उच्च शिक्षा तक व्यापक सुधारों की जानकारी देते हुए बताया गया कि इसमें कौशल विकास, मातृभाषा में शिक्षा, डिजिटल लर्निंग और शिक्षकों के प्रशिक्षण पर फोकस किया गया है। प्रशिक्षण में नई शिक्षा पद्यति एवं क्लास रूम को छात्रों के लिए रोचक बनाने के संबंध में नई-नई गतिविधियों के बारे में टिप्स दिए गए। प्रशिक्षण के बाद शिक्षकों ने छात्रों में लर्निंग प्रॉसेस के विकास में अपनाई जाने वाली विभिन्न नवाचार गतिविधियों को प्रस्तुत किया।

इनका कहना है

नई शिक्षा नीति लागू करने का मुख्य उद्देश्य शिक्षा में क्रांतिकारी बदलाव लाकर उसे वैश्विक स्तर पर खड़ा करना और ज्ञान के क्षेत्र में भारत को महाशक्ति बनाना है। श्री शर्मा ने बताया इस प्रशिक्षण में शिक्षकों को छात्रों की याददाश्त को बढ़ाने, उनकी विषयों के प्रति समझदारी विकसित करने, उसे दैनिक जीवन से जोड़ने और तार्किक शक्ति विकसित करने के बारे में उपयोगी जानकारी दी गई है।

सीके शर्मा
प्राचार्य, महर्षि विद्या मंदिर छतरपुर

सागर, मंगलवार 1 अप्रैल 2025

संस्थापक-संपादक : स्व. माया राम सुरजन

सोनिया के उठाये मुद्दों पर ध्यान दे सरकार!

क्रांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष और राज्यसभा की सदस्य सोनिया गांधी ने एक लेख में केन्द्र सरकार की उसकी शिक्षा नीति को लेकर जमकर घेराबन्दी की है। उनका आरोप है कि भारतीय जनता पार्टी की सरकार बिना पर्याप्त विचार-विमर्श के और अपने राजनीतिक उद्देश्यों को पूरा करने के मकसद से राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 जनता पर थोप रही है। अंग्रेजी अखबार द हिंदू में प्रकाशित होने के बाद जमकर चर्चा में आये इस लेख में सोनिया गांधी ने इस बात की आलोचना की है कि भाजपा सरकार ने 'सी 3' (केंद्रीकरण- सेंट्रलाइज़ेशन, व्यावसायीकरण- कमर्शिलाइज़ेशन और सांप्रदायिकता- कम्युनलिज़्म) के अपने एजेंडे को आगे बढ़ाने का साधन नई शिक्षा नीति (एनईपी) को बनाया है। इस लेख में वैसे तो कांग्रेस नेत्री ने अनेक महत्वपूर्ण मुद्दे उठाये हैं परन्तु इसका मुख्य फोकस शिक्षा प्रणाली के वे आयाम हैं जो देश के लिये विनाशकारी साबित होंगे। उन्होंने एनईपी में अनेक खामियां गिनाते हुए कहा कि यह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विचारों को पूरा करने के लिये बनाई गई है।

शिक्षा किसी भी समाज के विकास की बुनियाद होती है। सोनियाजी के इस लेख में एनईपी से उत्पन्न होने वाले खतरे तथा उनकी चिंताएं साफ झलकती हैं जो इस बात का भी आभास कराती हैं कि इस शिक्षा प्रणाली की राह पर चलकर बनने वाला समाज व देश कैसा होगा। इस लेख में सरकार की शिक्षा के प्रति बरती जाने वाली उदासीनता तथा नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पिछले 11 वर्षों से चल रही सरकार की सायास फैलाई जा रही बदइंतज़ामी के चलते बड़ी तादाद में बन्द होते स्कूल, सरकार के विचारों का समर्थन न करने वाले शिक्षाविदों तथा शिक्षकों के साथ होता भेदभावपूर्ण व्यवहार आदि की ओर तो ध्यान दिलाया ही गया है, सोनिया गांधी ने विस्तार से स्पष्ट किया है कि ' 3 सी' का एजेंडा मोदी सरकार किस प्रकार से लागू कर रही है और उसके दुष्परिणाम क्या हो रहे हैं। यही एक तरह से उनकी शिक्षा व्यवस्था की समीक्षा का निष्कर्ष है जो हर उस नागरिक को परेशान करने के लिये काफी होना चाहिये जो मुल्क की बेहतरी की सोचता हो। नई शिक्षा प्रणाली के नाम पर बच्चों को जिस प्रकार से ढाला जायेगा और उनके जो हालात होंगे, उसकी ओर साफ इशारा सोनिया गांधी के लेख में है।

मुख्यत: जिस '3 सी' का उन्होंने अपने लेख में ज़िक्र किया है, उसके पहले 'सी' यानी केन्द्रीकरण के बारे में बात की जाये तो यह तो साफ है कि यह सरकार समाज के हर संसाधन व अवसरों पर एकाधिकार कर रही है। इनमें शिक्षा व्यवस्था भी है। लेख में कहा गया है कि वैसे तो शिक्षा समवर्ती सूची में शामिल है, यानी वह केन्द्र व राज्य दोनों का ही विषय है, लेकिन इस महत्वपूर्ण मसले पर केन्द्र सरकार न तो राज्यों से चर्चा करती है और न ही वह विशेषज्ञों से सलाह-मशविरा लेती है। वह इस मामले में अपनी मर्जी तो थोपती है बल्कि उसका रवैया 'धमकी भरा' भी होता है। उन्होंने इस मामले में तमिलनाडु के साथ केन्द्र द्वारा राज्यों पर हिन्दी को थोपने की कोशिशों की ओर भी ध्यान दिलाया है।

दूसरे 'सी' यानी व्यवसायीकरण की बात करें तो यह पहले ही साफ दिख रहा है कि मोदी सरकार शिक्षा को इतनी महंगी कर देने पर आमादा है कि वह सामान्य लोगों की पहुंच से बाहर हो जाये। इसके कारण देश में वर्गभेद और भी बढ़ेगा। थोड़े से लोग ही इस शिक्षा को पाने का खर्च वहन कर सकेंगे जबकि अधिसंख्य जनता स्कूल-कॉलेजों का खर्च वहन नहीं कर सकेगी। शासकीय व सस्ती शिक्षा की बजाय निजी व महंगी शिक्षा के प्रति सरकार का रुझान साफ दिखाई देता है। सोनिया गांधी द्वारा उल्लेखित तीसरा 'सी' इस फार्मूले का सबसे खतरनाक पक्ष है- शिक्षा का साम्प्रदायिकरण। इस शिक्षा पद्धति में आधुनिकता का अभाव है। उन्होंने ध्यान दिलाया है कि पाठ्यक्रम से महात्मा गांधी और मुगलकालीन इतिहास को हटाया जा रहा है जो कि बहुत गम्भीर है। इतिहास में हुई घटनाएं किसी को पसंद आयें या न आयें, वे हो चुकी हैं; लेकिन भाजपा अपनी सरकार के जरिये उन्हें इसलिये मिटाना चाहती है ताकि उसका हिंदुत्व का एजेंडा पूरा हो। यह बच्चों में आधुनिक, तटस्थ व वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित शिक्षा की जगह पर पिछड़ी सोच तथा पूर्वाग्रहों वाली प्रणाली लागू करने का प्रयास है। इसका मकसद अल्पसंख्यकों के खिलाफ नफ़रत तथा हिंसा को बढ़ावा देना है जो कि भाजपा का अगले कई वर्षों तक का वोट बैंक बनायेगा। राजनीतिक स्तर पर किया गया ध्रुवीकरण, जिसके बल पर भाजपा ने सत्ता हासिल की है- उसे बनाये रखना भी इसी प्रणाली के जरिये होगा।

दरअसल भाजपा सरकार देश को उसी मध्य युग में ले जाना चाहती है जहां समाज का आधार मनुवादी व्यवस्था हो। इसमें शिक्षा उन थोड़े से लोगों के लिये उपलब्ध होगी जो विशेषाधिकार प्राप्त हों। देश की बहुसंख्य आबादी निरक्षर या अल्प शिक्षित रहे जिसे अपने अधिकारों के प्रति न तो जानकारी हो, न ही वह अपने विकास की बात करे। संघ का पूंजीवाद में विश्वास है। कुछ लोगों के हाथों में सारी आर्थिक ताकत सिमट जाने पर उनके लिये सस्ता मानव श्रम जुटाने की जिम्मेदारी इसी शिक्षा प्रणाली की होगी। इतना ही नहीं, इसी शिक्षा प्रणाली में ऐसे नागरिकों की पौध तैयार हो रही है जो भाजपा के निर्देश पर समाज में हिंसा व घृणा फैलाने का काम अगले कई बरसों तक करती रहेगी। इसलिये इसका विरोध ज़रूरी है। सोनियाजी ने बहुत महत्वपूर्ण विषय पर नागरिकों का ध्यान आकृष्ट किया है। हठधर्मिता छोड़कर सरकार इस ओर ध्यान दे।

पत्रकारिता में पहुंच बनाती 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता'

■ डॉ. संतोष पाटीदार

कृत्रिम बुद्धिमत्ता' (एआई) दुनिया भर की दशा और दिशा बदल रही है। इसे लेकर एक अलग दुनिया के दावे किए जा रहे हैं।'एआई' के चौंकाने वाले आविष्कारों की जानकारी और उनके उपयोग के साथ इसके खतरों के कहानी-किस्से भी मीडिया के माध्यम से दुनिया को सुनने मिल रहे हैं। ऐसे में पत्रकारिता इससे कैसे दूर रह सकती है? 'एआई' का चमत्कार और पराक्रम देखकर लगता है कि यह प्रौद्योगिकी हौले-हौले पत्रकारिता को भी बदल देगी। क्या वास्तव में पत्रकारिता के साथ ऐसा होगा? इसे लेकर जितने प्रयोग, चिंतन, बहस और चर्चा दुनिया के उत्तरी गोलार्ध के विकसित कहे जाने वाले देशों में है, उतने दक्षिण की आधी दुनिया के विकासशील देशों में शायद नहीं है।

'ग्लोबल साउथ' के पत्रकारों में 'एआई' को लेकर असमंजस है। प्रौद्योगिकी के प्रयोग से जुड़े जोखिम और दायित्व, मीडिया प्रबंधन में नीतिगत उदासीनता, महंगे उपकरण, प्रशिक्षण का अभाव जैसे कारण 'एआई' पत्रकारिता की राह में बाधक है। तकनीकी विकास के इस दौर में यह देखना दिलचस्प होगा कि आने वाले वर्षों में 'एआई' की दिशा बदलती है या नहीं और क्या 'ग्लोबल साउथ' या विकासशील देशों के पत्रकार भविष्य में अपने काम के लिए 'एआई' को एक संसाधन के रूप में अपनाएंगे या उससे जुड़े संभावित दायित्व और जोखिम के रूप में देखेंगे।

इस तकनीक को लेकर दुनिया भर में उत्सुकता तो बहुत है, लेकिन इसके प्रभाव के बारे में अधिकांश बहस या बातचीत विकसित देशों तक ही केंद्रित रही है। इस आधी दुनिया के दृष्टिकोण के आधार पर दुनिया भर में मान्यताएं बन रही हैं। इसके प्रयोग में वहां की पत्रकारिता भी प्रमुख रूप से आगे है। दुनिया में 'ग्लोबल साउथ' के देश कमजोर या बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था के साथ विकसित हो रहे हैं। ऐसे देशों में 'एआई' को लेकर मीडिया के दृष्टिकोण पर एक अध्ययन किया गया है। 'ग्लोबल साउथ' में अफ्रीका, लैटिन अमेरिका, एशिया आदि महाद्वीपों के देश शामिल हैं।

'थॉमसन रॉयटर्स फाउंडेशन' (टीआरएफ) की एक रिपोर्ट, जो दुनिया के 70 से अधिक देशों के 200 से अधिक पत्रकारों के सर्वेक्षण के निष्कर्षों पर आधारित है, सामने आई है। इस रिपोर्ट के आधार पर अध्ययनकर्ता डमियन रेडक्लिप विस्तार से बताते हैं कि इस अध्ययन का उद्देश्य 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' की जानकारी और आशंका पर प्रकाश डालना है। रिपोर्ट में बताया गया है कि 'एआई' का उपयोग किस तरह किया जा रहा है, न्यूज़रूम के सामने क्या-क्या अनोखी चुनौतियां हैं और पत्रकारों, न्यूज़रूम के लीडरों, वित्तपोषकों और नीति-निर्माताओं के लिए इसके क्या निहितार्थ हैं?

> **'एआई' अपनाने में बाधाएं : प्रशिक्षण और नीतिगत समस्याओं के कारण 'एआई' की इस नई प्रौद्योगिकी या टेक्नालॉजी तक पहुंच आसान नहीं होती, फिर भी, 'एआई' को लेकर सभी में उत्साह है। सर्वेक्षण में करीब 13फीसदी पत्रकारों ने बताया कि उनके न्यूज़रूम में 'एआई' नीति है, हालांकि इसे अपनाने में अन्य बाधाओं का भी सामना करना पड़ता है। कई पत्रकारों ने 'एआई' उपकरणों तक सीमित पहुंच, उच्च लागत और प्रशिक्षण की कमी के साथ-साथ मार्गदर्शन की कमी जैसी बाधाओं की बात कही।**

इस रिपोर्ट के कुछ निष्कर्ष हैं: 'एआई' को अपनाना व्यापक, लेकिन असमान है। सर्वेक्षण में 'एआई' प्रौद्योगिकी के लिए 'सतर्क' आशावाद' पाया गया, एक ऐसी भावना जो शायद इस तथ्य को झुठलाती है कि वैश्विक-दक्षिण में 'एआई' को अपनाना महत्वपूर्ण है। 10 में से आठ से अधिक (81.7फीसदी) पत्रकार अपने काम में 'एआई' उपकरणों का उपयोग करते हैं। 81फीसदी उत्तरदाताओं ने कहा कि वे पहले से ही अपने काम में 'एआई' टूल का उपयोग करते हैं। इनमें से लगभग आधे (49.4फीसदी) लोग प्रतिदिन 'एआई' का उपयोग करते हैं, जो दर्शाता है कि कितनी जल्दी यह उनकी कार्य-संस्कृति का हिस्सा बन गया है।

पत्रकार मुख्य रूप से कंटेंट का प्रारूप तैयार करने और संपादन, ट्रांसक्रिप्शन, तथ्यों की जांच और शोध के लिए 'जनरेटिव एआई' का उपयोग कर रहे हैं। 'चैटजीपीटी,' 'ग्रामरली,' 'ओटर' और 'कैनवा' जैसे उपकरण कई पत्रकारों के लिए आवश्यक हो गए हैं, क्योंकि वे समय बचाने और दक्षता बढ़ाने की क्षमता रखते हैं, साथ ही उनके विचारों का दायरा और रचनात्मकता को बढ़ाते हैं। जैसा कि घाना के एक पत्रकार ने बताया, 'एआई ने मेरी पत्रकारिता को काफी हद तक बेहतर बनाया है। इसने मेरे शोध को सुव्यवस्थित किया है और मुझे जटिल डेटा का त्वरित और सटीक विश्लेषण करने में सक्षम बनाया है, विशेष रूप से 'एचआईवी' शोध और पर्यावरण रिपोर्टिंग जैसे क्षेत्रों में।'

'एआई' अपनाने में बाधाएं : प्रशिक्षण और नीतिगत समस्याओं के कारण 'एआई' की इस नई प्रौद्योगिकी या टेक्नालॉजी तक पहुंच आसान नहीं होती, फिर भी, 'एआई' को लेकर सभी में उत्साह है। सर्वेक्षण में करीब 13फीसदी पत्रकारों ने बताया कि उनके न्यूज़रूम में 'एआई' नीति है, हालांकि इसे अपनाने में अन्य बाधाओं का भी सामना करना पड़ता है। कई पत्रकारों ने 'एआई' उपकरणों तक सीमित पहुंच, उच्च लागत और प्रशिक्षण की कमी के साथ-साथ मार्गदर्शन की कमी जैसी बाधाओं की बात कही। कुछ लोगों के लिए, विशेष रूप से कम संसाधन वाले न्यूज़रूम में, 'एआई' को अपनाना चुनौतीपूर्ण बना हुआ है। अक्सर ऐसा वित्तीय और तकनीकी बाधाओं के कारण होता है।

सर्वेक्षण में सबसे चौंकाने वाला तथ्य यह था कि लगभग 58फीसदी 'एआई' उपयोगकर्ता स्वयं-शिक्षित हैं, यानी खुद के प्रयास से इस विधा को सीख रहे हैं, उनके नियोक्ताओं से उन्हें कोई औपचारिक प्रशिक्षण नहीं मिला है। यह निवेशकों के लिए एक अवसर प्रदान करता है। कई पत्रकारों ने 'एआई'-केंद्रित कार्यशालाओं, नैतिक दिशा-निर्देशों और न्यूज़रूम नीतियों की जरूरत की इच्छा जताई, जो उन्हें 'एआई' की क्षमता को जिम्मेदारी से प्रयोग करने में मदद कर सकती हैं। जैसा कि 'संयुक्त-अरब-अमीरात' के एक न्यूज़रूम मैनेजर ने बताया कि दर्शकों के विश्वास को बनाए रखने के लिए नीतियां आवश्यक हैं, विशेष रूप से 'एआई'-जनरेटेड सामग्री के मामले में। न्यूज़रूम में 'एआई' के उपयोग के लिए स्पष्ट नैतिक ढांचे, नियामक दिशा-निर्देश और पारदर्शिता जरुरी है। एशिया के पत्रकार मानते हैं कि 'एआई' पत्रकारिता के लिए बेहतर प्रौद्योगिकी है, लेकिन इसका उपयोग बहुत जिम्मेदारी से करना होगा।

भविष्य की ओर देखते हुए, विकासशील देशों के पत्रकार 'एआई' को एक ऐसे उपकरण के रूप में देखते हैं जो उनके काम को बेहतर बना सकता है - बशर्ते इसका उपयोग जिम्मेदारी से किया जाए। इस विरोधाभास को स्पष्ट करते हुए, भारत के एक पत्रकार ने कहा कि 'एआई' की गति, डेटा-विश्लेषण और दक्षता पत्रकारिता की पहुंच को बढ़ा सकते हैं, लेकिन यह गलत सूचना और पत्रकारिता की अखंडता के लिए जोखिम भरी चुनौतियां भी पेश करता है। विकासशील देशों में पत्रकारिता को लाभ पहुंचाने के लिए पत्रकारों, वित्तपोषकों, मीडिया विकास संगठनों और नीति निर्माताओं को संयुक्त रूप से 'एआई' प्रौद्योगिकी को अपनाने की दिशा में आगे बढ़ना होगा।

पत्रकारिता की विविध आवश्यकताओं के लिहाज से उपयुक्त 'एआई' उपकरण बनाने के लिए मीडिया संगठनों, डेवलपर्स और निवेशकों के बीच साझेदारी को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। पत्रकारिता में इस प्रौद्योगिकी की पहुंच समान रूप से होना चाहिए। यह सुनिश्चित करना कि 'एआई' के लाभ बड़े, संसाधनों वाले न्यूज़रूम तक सीमित न हों। जैसे-जैसे 'एआई' को अपनाने की प्रक्रिया तेज होती जा रही है, पत्रकारों, न्यूज़रूम और नीति निर्माताओं को यह सुनिश्चित करने के लिए मिलकर काम करना होगा कि प्रौद्योगिकी पत्रकारिता के मूल सिद्धांतों को कमजोर करने की बजाय मजबूत बनाए।

(वरिष्ठ पत्रकार व लेखक हैं।)

तकनीक के तनाव : मोबाइल पर जुआ?

डिजिटल इंडिया फाऊंडेशन' की एक हाल की रिपार्ट के अनुसार भारत में 'आनलाईन गैंबलिंग' या जुआ बहुत तेजी से बढ़ रहे हैं। ऐसे डिजिटल प्लेटफार्म पर तीन महीनों में 160 करोड़ विजिट दर्ज किए गए हैं। सरकार द्वारा इसे रोकने या नियंत्रित करने के तमाम प्रयासों के बावजूद अनेक अवैध कारोबारी अपनी गतिविधियां इस दिशा में बढ़ा रहे हैं। इसका समाज, विशेषकर युवाओं और बच्चों पर बहुत प्रतिकूल असर पड़ा है।

'द लांसेट' पत्रिका में प्रकाशित रिचर्ड आरमिटेंड के अध्ययन के अनुसार, आनलाईन जुए का बच्चों के मानसिक, भावनात्मक तथा सामाजिक स्वास्थ्य और स्कूली उपलब्धि पर बहुत प्रतिकूल असर पड़ता है। नतीजे में उनकी अनेक लतों में फंसने की संभावना बढ़ती है। नई तकनीक के आगमन से अनेक लाभ मिल सकते हैं, यदि समुचित सावधानियां न बरती जाएं तो कई तरह की गंभीर क्षति भी हो सकती है। मोबाइल फोन से बहुत सी सुविधाएं प्राप्त होती हैं, अनेक लाभ हैं, पर इसे कई तरह के जुए के खेल का माध्यम भी बनाया जा रहा है। ताश ही नहीं, लूडो और क्रिकेट जैसे लोकप्रिय खेलों को भी ऐसा रूप दिया जा रहा है जो जुए के विभिन्न रूप ही हैं।

भारत डोंगरा

> **नई तकनीक के आगमन से अनेक लाभ मिल सकते हैं, यदि समुचित सावधानियां न बरती जाएं तो कई तरह की गंभीर क्षति भी हो सकती है। मोबाइल फोन से बहुत सी सुविधाएं प्राप्त होती हैं, अनेक लाभ हैं, पर इसे कई तरह के जुए के खेल का माध्यम भी बनाया जा रहा है। ताश ही नहीं, लूडो और क्रिकेट जैसे लोकप्रिय खेलों को भी ऐसा रूप दिया जा रहा है जो जुए के विभिन्न रूप ही हैं।**

इस नए तरह के जुए के जाल में अनेक किशोर व युवा फंसते चले जा रहे हैं। यहां तक कि दूर-दूर के गांवों में भी ऐसा हो रहा है। इस तरह के जुए में एक बार पैसे हारने के बाद इन किशोरों या युवकों में यह गहरी इच्छा रहती है कि कम-से-कम जो गंवाया है उतना तो वापस कर लिया जाए। इस उम्मीद में वे और पैसे लगाते हैं, पर प्राय: उनका घाटा बढ़ता ही जाता है। इस कारण वे बहुत तनावग्रस्त हो जाते हैं और कभी-कभी तो अपने घर-परिवार से ही कुछ पैसा इधर-उधर कर जुए में डुबोते हैं। कई बार तो बच्चे भी इस जाल में फंस जाते हैं। हालांकि इसके लिए एक खास आयु वर्ग को ही अनुमति दी जाती है, पर कई बार इसका उल्लंघन किसी-न-किसी तिकड़म से किया जाता है।

इस कारण अनेक बच्चों का ध्यान न केवल अपनी पढ़ाई-लिखाई से हट जाता है, अपितु वे अनेक तरह के तनावों का शिकार भी हो जाते हैं और जो उम्र अच्छे जीवन के लिए तैयारी की होती है, उसी में वे बर्बादी की ओर बढ़ने लगते हैं। यदि उन पर शक कर घर-परिवार के बड़े लोग उन्हें रोकते हैं या कुछ कहते हैं तो किशोर बहुत जल्दी तनावग्रस्त हो जाते हैं व उल्टी-सीधी कहने लगते हैं। इस कारण अनेक माता-पिता बहुत परेशान रहते हैं। एक महिला ने तो यहां तक कहा कि अपने बड़े हो रहे बच्चे की इस लत से वह इतनी परेशान हो गई हैं कि उसने दस हजार रुपए का मोबाइल ही गुस्से में तोड़ दिया, पर बच्चे ने फिर भी पूरी तरह इस आदत को छोड़ा नहीं।

हाल ही में जब यह लेखक बुंदेलखंड क्षेत्र की अनेक महिलाओं से नशे को कम करने के उपायों पर बातचीत कर रहा था, तो उन्होंने कहा कि नशा करने का अभियान आप अवश्य चलाएं, पर उसके साथ जुए को कम करने के प्रयासों को भी जोड़ लीजिए। इस बारे में कुछ और पूछताछ करने पर पता चला कि कई बार जुए के खेल में झगड़े, गाली-गलौच, धमकियों की स्थिति भी आ जाती है। किसी गांव में बैठा अबोध किशोर इसके बारे में किसी को चाहे न बताए, पर अंदर-ही-अंदर उसके तनाव बढ़ते जाते हैं और उसे अन्य भीषण स्थिति की ओर भी ले जाते हैं। इस तरह के अनुभवों से गुजर चुके कुछ लोगों ने बताया कि शायद कुछ वयस्क लोग इस तरह की लत में अपना संतुलन बनाए रखते हों, पर जो किशोर व कच्ची उम्र के युवा हैं, उनका संतुलन प्राय: बिगड़ जाता है।

इसके अतिरिक्त ऐसे अनुभवों से गुजर चुके कुछ व्यक्तियों का कहना है कि केवल जुए वाले 'ऑन लाइन' खेलों के कारण ही तनाव की समस्या नहीं है। कुछ ऐसे खेल भी हैं जो जुए से न जुड़े होने के बावजूद तनाव व हिंसा का कारण बनते हैं। इन खेलों में बुरी तरह लीन होने या लत पड़ने के कारण अनेक बच्चों व किशोरों के मस्तिष्क का संतुलन बिगड़ जाता है। इस बारे में कुछ महिलाओं ने बताया कि उन्होंने अपने आसपास ही यह होते हुए देखा है।

इसके अतिरिक्त कुछ लोगों ने यह शिकायत भी की है कि मोबाइल पर अश्लील चित्र या वीडियो बहुत अधिक देखने के कारण भी अनेक समस्याएं बढ़ रही हैं। बच्चे व किशोर अनेक तनावों व ऐसी सोच से त्रस्त हो रहे हैं, जिसे ठीक से समझने के लिए वे कच्ची उम्र में मानसिक व शारीरिक तौर पर तैयार ही नहीं हैं। इस कारण महिला-विरोधी यौन हिंसा दूर-दराज के गांवों में भी बढ़ सकती है। इस तरह की विभिन्न समस्याएं हाथ से बाहर निकल जाएं, इससे पहले इन्हें न्यूनतम करने की सभी संभावनाओं पर भली-भांति विचार करते हुए उचित उपाय निकालने चाहिए व इसके आधार पर एक अभियान द्वारा इन सभी खतरनाक संभावनाओं व क्षतियों को न्यूनतम करना चाहिए।

(लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं। उनकी अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।)

आपके पत्र

सरकार के कठोर निर्णय ने नक्सलियों को हथियार छोड़ने के लिए किया मजबूर

हर कोई जीना चाहता है मरना कोई नही चाहता। गृहमंत्री ने ऐलान किया था कि 2026 तक नक्सलियों का नामोनिशान मिटाने के लिए सरकार का निर्णय नक्सलियों को आत्मसमर्पण के लिए मजबूर किया है। नक्सलवाद देश और राज्य के लिए नासूर बन गया है। 1968 से नक्सलियों के हौसले बुलंद है। सरकार के विकासलक्षी आयोजन पर नक्सलियों को मुख्यधारा में जुड़ने का मन बनाया है। पुलिस के समक्ष आत्मसमर्पण करने वाले 13 नक्सली 68 लाख के इनामी थे। भूख, भय और परिवार के साथ अन्याय से हताश होकर आत्मसमर्पण के लिए आगे आए है। इतने नक्सलियों का आत्मसमर्पण करना सरकार की कुशल नीति रही है। अब यह धारणा प्रबल बन गई है कि सरकार की नीति विकासवाद की है। सरकार ने हरेक को 25 25 हजार की राशि और पुनर्वास उपलब्ध कराने का बीड़ा उठाया है। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह की डेडलाइन से नक्सलियों के समूल सफाये का अभियान तेज हुआ है। इसको ध्यान में रखकर नक्सलियों ने निर्दोष पर गोली नही चलाने का प्रण किया है। खूंखार नक्सली झीरम घाटी कांड में 18 लोगों को मार गिराया था। बस्तर में पिछले 16 महीनों में 1116 नक्सलियों ने आत्मसमर्पण किया है। यह केंद्र सरकार की उपलब्धि है। जिनकी पुनर्वास सम्बंधित सभी लोगों को अपने परिवार के साथ रहने की पूरी छूट दी है। उस दौरान 809 नक्सली पकड़े गए थे। इस मुठभेड़ में निर्दोष भेंट चढ़ते है। उल्लेखनीय है कि 2024 में इनामी नक्सलियों ने आत्मसमर्पण किया था। सरकार अपने हर स्तर पर विकासमूलक कार्यो को अंजाम दे रही है। लगातार मुठभेड़ों में नक्सली मारे जा रहे है इस वजह से मुख्यधारा में जुड़ने और परिवार के साथ सुकून का जीवन जीने के लिए मन बनाया है। बीजापुर में 50 नक्सलियों ने हिंसा छोड़ मुख्यधारा में जुड़ने के लिए विकास का मार्ग अपनाया है। नकारात्मक को छोड़कर नक्सली हथियारों को हमेशा के लिए छोड़ने का संकल्प लिया है। यह बदलते समय और सरकार का सकारात्मक रवैया का असर है। इसमें कांग्रेस की अहम भूमिका और कांग्रेस की नीतियों के कारण नक्सलियों के हौसले बुलंद होते गए। ग्रामीण सड़को का निर्माण, करोड़ों के विकास कार्य और चौकियों का बनना नक्सलियों के लिए आफत साबित हो रहा था। इन विकास कार्यो को देखते हुए और हमलों में मारे जाने की वजह से नक्सलियों ने आत्मसमर्पण का रास्ता अपनाने के लिए मजबूर हुए हैं। मुख्यधारा से जुड़कर हमेशा के लिए नई जिंदगी की शुरुआत वर्तमान सरकार की बड़ी देन है।

कांतिलाल मांडोत, सूरत

ललित सुरजन की कलम से

बौने टिड्डी बनकर छा गए

'बड़ी संख्या में ऐसे लोग जो बुध्दि विवेक में बौने हैं, आए दिन किसी न किसी रूप में सम्मानित, पुरस्कृत और अलंकृत होते रहते हैं। उन्हें सर-आंखों पर बैठाते समय कोई भी यह सवाल नहीं पूछता कि उनका बौध्दिक स्तर क्या है। बौध्दिक स्तर से आशय यहां सिर्फ कॉलेज या विश्वविद्यालय की डिग्री से नहीं है। ऐसा व्यक्ति विवेक सम्पन्न है या नहीं, उसमें सिध्दांतों पर टिके रहने की जिद है या नहीं, वह बौध्दिक रूप से कितना ईमानदार है- इन बातों की तरफ शायद ही किसी की तवज्जो जाती हो। इस अनदेखी का ही परिणाम है कि देश की जनतांत्रिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण और निर्णयकारी स्थानों पर ऐसे-ऐसे लोग काबिज हो चुके हैं जो कि उसके सर्वथा अयोग्य थे और इस गफलत की भारी कीमत हमें सामूहिक रूप से चुकाना पड़ रही है।'

(देशबन्धु में 11 अप्रैल 2013 को प्रकाशित)

https://lalitsurjan.blogspot.com/2013/04/blog-post_11.html

पावन प्रसंग

चरित्र और आदर्श की कीमत पर विकास निरर्थक

मूल्य, सिद्धांत और नैतिकता जीवन के लक्ष्य और उसके क्रियान्वयन में सर्वाधिक संवेदनशील एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सफलता की धारणा केवल स्थापित मापदंड न होकर मानवीय मूल्यों से जुड़ा होकर मानव कल्याण के लिए भी होना चाहिए। इसमें कोई संदेह नहीं कि विश्व भर की सभी सभ्यताओं, संस्कृतियों और धर्मों में अहिंसा, सत्य ,करुणा, सेवा, दया और विश्व बंधुत्व की भावना की निर्विवाद उपस्थिति दिखाई देती है और वैश्विक विकास की अवधारणो भी इन्हीं बिंदुओं पर रखकर तय की जाती है। प्राचीन काल से ही मूल्यों की प्रतिबद्धता की परंपरा चली आ रही है। ऋषि-मुनियों ने तो यहां तक कहा है कि जिसका चरित्र तथा माननीय आदर्श चला गया वह व्यक्तिं आदर्शों तथा मूल्य के पोषक उदाहरणों की अंतहीन सूची है जिनमें कबीर, रैदास, संत, ज्ञानेश्वर तुकाराम, मोइनुद्दीन चिश्ती, निजामुद्दीन औलिया, रहीम, खुसरो, गांधी, नेहरू, टैगोर, सुभाष, विवेकानंद जैसे महान लोग सिद्धांतों की प्रतिबद्धता को अपने जीवन की सफलता मानकर अपने जीवन को समाज को सौंप दिया था। परिणाम स्वरूप व्यक्ति को महज सफलता का पुजारी न बन कर मूल्यों के प्रति प्रतिबंध होने का प्रयास करना चाहिए ताकि तनिक सफलता के स्थान पर चिरस्थाई एवं समाज उपयोगी सफलता प्राप्त हो सके। वर्तमान में यह स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है कि व्यक्ति स्वाद तथा सफलता के लिए अक्सर अपने मूल्यों को तिलांजलि दे देता है। वर्तमान सुख एवं लालच चिरस्थाई सफलता के सामने महत्वपूर्ण एवं प्राथमिक हो जाता है। आज मनुष्य तत्काल एवं अस्थायी सफलता के पीछे माननीय मूल्यों प्रतिबद्धताओं को किनारे कर उस मरीचिका की तरफ दौड़ रहा है जो अत्यंत अस्थायी एवं पानी के बुलबुले की तरह है और इससे न तो कोई इतिहास बनता है और न ही कोई प्रतिमान ही स्थापित होता है। पानी का पतला रेला नदी का रूप नहीं ले सकता। उसी तरह बिना मूल्यों की सफलता स्थाई नहीं होती है। राजनीति तथा प्रशासन में मूल्यों सिद्धांतों की तो ज्यादा आवश्यकता महसूस की जाती है। क्योंकि राष्ट्र तथा नीति निर्देशक तत्वों को संचालन की दिशा देने के लिए मानवीय संवेदना, मूल्य और सिद्धांतों की अत्यंत आवश्यकता होती है। अन्यथा समाज दिग्भ्रमित होकर बिखरने के कगार पर पहुंच जाता है। राष्ट्र विखंडित होने की स्थिति में आ जाता है। मूल्यविहीन समाज अपने अधिकारों के दुरुपयोग तथा कर्तव्य के प्रति लापरवाही तथा उदासीनता के चलते समाज को सोचनीय स्तर पर लाकर खड़ा कर देता है। सफलता तब ही शाश्वत तथा स्थायी हो सकती है जब इसमें जीवन के मूल्यों और सिद्धांतों का समावेश होता है। वही देश और राष्ट्र चिरस्थायी तथा लंबे समय तक स्वतंत्र रह सकता है, जिसके शासक एवं प्रजा अपने संपूर्ण कार्य मूल्यों, उसूलों और नैतिक प्रतिबद्धता के मार्ग पर चलकर वैश्विक देशों से अपने संबंध निर्मल तथा सैद्धांतिक बनाकर रखता है अन्यथा उस राष्ट्र को विखंडित और पराधीन होने से कोई नहीं बचा सकता।

संजीव ठाकुर

पूर्व केंद्रीय मंत्री गिरिजा व्यास आग लगने से झुलसीं, घर में आरती करते समय हुआ हादसा

उदयपुर, एजेंसी। कांग्रेस की वरिष्ठ नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री गिरिजा व्यास सोमवार को राजस्थान के उदयपुर शहर में अपने घर में आरती के दौरान हादसे का शिकार हो गईं. 79 वर्षीय गिरिजा व्यास को एक निजी अस्पताल में इलाज के लिए ले जाया गया. यहां पर प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें अहमदाबाद रेफर किया गया।

बताया जाता है कि गिरिजा आरती कर रही थी. तभी जलते दीपक से उनके दुपट्टे में आग लग गई. परिवार के सदस्य उन्हें अस्पताल ले गए. घर में ही काम कर रहे लोगों ने उन्हें संभाला. गिरिजा व्यास की बहू हितांशी शर्मा ने बताया कि उनकी सास गणगौर पूजा कर रही थीं. इसी दौरान नीचे जल रहे दीपक से चुन्नी ने आग पकड़ ली. इससे वह झुलस गईं। वे राज्य और केंद्र सरकार में मंत्री के अलावा राजस्थान कांग्रेस अध्यक्ष और राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यख भी रह चुकी हैं। पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने गिरिजा व्यास के झुलसने पर चिंता जताई है. इस दौरान उन्होंने एक्स पर पोस्ट किया, पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ.गिरिजा व्यास के आग से झुलसकर घायल होने का समाचार काफी चिंताजनक है. वे ईश्वर से उनके जल्द स्वास्थ्य लाभ की प्रार्थना करता हूं।

प्रदेश में शुरू होगी मुख्यमंत्री परिवहन सेवा, मंत्रिपरिषद के अनुमोदन के बाद होगा योजना का क्रियान्वयन

सुदूर क्षेत्रों में आसान होगा आवागमन

- भोपाल, इंदौर, जबलपुर, ग्वालियर, उज्जैन, सागर और रीवा में क्षेत्रीय कंपनियां गठित होंगी
- जिला स्तर पर गठित की जाएंगी यात्री परिवहन समितियां

भोपाल, देशबन्धु। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रदेश के ग्रामीण, शहरी और इंटरसिटी परिवहन व्यवस्था को सुदृढ़ बनाया जाएगा। इसके लिए मुख्यमंत्री सुगम परिवहन सेवा प्रारंभ की जाएगी। योजना का प्रस्ताव तैयार कर लिया गया है। सबके साथ विस्तृत विचार-विमर्श, सुझाव एवं सहमति के बाद शीघ्र ही इस योजना प्रस्ताव को अनुमोदन के लिये मंत्रि-परिषद की बैठक में लाया जायेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव सोमवार को मुख्यमंत्री निवास स्थित समत्व भवन में नवीन परिवहन सेवा (मुख्यमंत्री सुगम परिवहन सेवा) के संबंध में प्रारंभिक चर्चा के लिए आयोजित एक उच्च स्तरीय बैठक को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में परिवहन सेवाओं को और बेहतर बनाया जाएगा। ग्रामीण क्षेत्रों में विशेषकर प्रदेश के सभी जनजातीय क्षेत्रों में सुगम यात्री परिवहन के लिए सरकार हर जरूरी प्रयास करेगी। पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री प्रहलाद पटेल, नगरीय विकास एवं प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय, मुख्य सचिव अनुराग जैन ने बैठक में वर्चुअली सहभागिता की। समत्व में हुई बैठक में स्कूल शिक्षा एवं परिवहन मंत्री उदय प्रताप सिंह, अपर मुख्य सचिव मुख्यमंत्री कार्यालय डॉ. राजेश राजौरा, अपर मुख्य सचिव नगरीय विकास एवं प्रशासन संजय कुमार शुक्ल, सचिव परिवहन मनीष सिंह, सचिव मुख्यमंत्री सिबी चक्रवर्ती एवं संचालक जनसम्पर्क अंशुल गुप्ता सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश की यात्री परिवहन संबंधी भावी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर इस नवीन योजना के सभी पक्षों पर गहनता से अध्ययन करें, जिससे यात्रियों को इसका अधिकतम लाभ मिल सके।

सचिव परिवहन मनीष सिंह ने नवीन परिवहन सेवा योजना की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि नई परिवहन योजना में प्रदेश में यात्री बसों के संचालन की त्रि-स्तरीय मॉनिटरिंग की जाएगी। इसके लिए प्रदेश मुख्यालय स्तर पर एक राज्यस्तरीय होल्डिंग कंपनी गठित की जाएगी। प्रदेश के सात बड़े संभागों (भोपाल, इंदौर, जबलपुर, ग्वालियर, उज्जैन, सागर एवं रीवा) में 7 क्षेत्रीय सहायक कंपनियां भी गठित की जाएगी। इसी उद्देश्य से प्रदेश के सभी जिलों में जिला स्तरीय यात्री परिवहन समिति गठित भी की जायेंगी। यह सभी बॉडीज यात्री परिवहन को बेहतर बनाने, यात्री किराया तय करने, रूट चार्ट तैयार करने में समन्वय और यात्रियों को योजना का अधिकतम लाभ दिलाने के लिए अनुश्रवण एवं मार्गदर्शन करेगी।

बताया गया कि सात क्षेत्रीय सहायक कंपनियों की आय अर्जन के स्रोत निर्माण के लिए भी इस योजना में विशेष इंतजाम किए जाएंगे। नवीन योजना में सरकार अनुबंधित बसों को प्राथमिकता से परमिट देगी। इन बसों पर प्रभावी नियंत्रण सरकार का ही होगा। नवीन योजना में यात्रियों एवं बस ऑपरेटर्स के लिए ऐप और कंपनी की मॉनिटरिंग के लिए एक डैशबोर्ड भी होगा नवीन परिवहन सेवा के संचालन के लिए प्रदेश के सात बड़े संभागों में यात्री बसों की आवश्यकता और जरूरी संख्या के लिए सर्वे कराये जा रहे हैं। सर्वे के परिणाम जल्द ही प्राप्त हो जायेंगे। सर्वे के फीडबैक के आधार पर सरकार इस योजना के क्रियान्वयन की दिशा में आगे बढ़ेगी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गुजरात के मुख्यमंत्री का किया स्वागत

गुजरात और मध्यप्रदेश के बीच परस्पर सहयोग की सुदृढ़ परम्परा : पटेल

भोपाल, देशबन्धु। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सोमवार की शाम स्टेट हैंगर भोपाल पर गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल और गुजरात के गृहमंत्री हर्ष संघवी के आगमन पर उनका पुष्प-गुच्छ और अंगवस्त्र से स्वागत किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गुजरात के मुख्यमंत्री श्री पटेल और गृह मंत्री श्री संघवी को राजा भोज की प्रतिमा भेंट की।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि नर्मदा मैया ने मध्यप्रदेश और गुजरात को समृद्ध बनाने का कार्य किया है। मध्यप्रदेश में अनेक नगरों में बड़ी संख्या में गुजराती बंधु निवास करते हैं। गुजरात के साथ ही मध्यप्रदेश से भी अन्य देशों तक जाकर गुजराती समाज के उद्यमियों और प्रोफेशनल्स ने परिश्रम से स्थान बनाया है। गुजरात के मुख्यमंत्री श्री पटेल ने मुख्यमंत्री डॉ. यादव के स्वागत से भाव-विभोर होकर कहा कि उन्हें यहां आकर आत्मीयता का अहसास हुआ है। गुजरात और मध्यप्रदेश के बीच परस्पर सहयोग की सुदृढ़ परम्परा है। सदाकाल गुजरात-भोपाल के माध्यम से इन संबंधों में नया आयाम जुड़ रहा है। गुजरात के मुख्यमंत्री श्री पटेल सदाकाल गुजरात-भोपाल कार्यक्रम में हिस्सा लेने के लिए भोपाल पधारे हैं। गुजरात और मध्यप्रदेश के संबंधों में एक नया आयाम सदाकाल गुजरात कार्यक्रम के माध्यम से जुड़ रहा है। गुजरात से बाहर बसने वाले गुजरातियों के योगदान को सम्मानित करने के लिए सदाकाल गुजरात-भोपाल का कार्यक्रम किया गया। इसमें सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ ही गुजराती व्यंजनों का उत्सव भी आयोजित किया गया है।

राज्यपाल ने आचार्य बालकृष्णन से सिकल सेल के संबंध में की चर्चा

भोपाल, देशबन्धु। राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने आयुर्वेद में सिकल सेल उपचार अनुसंधान प्रयासों में पतंजलि योगपीठ ट्रस्ट से सहयोग की अपेक्षा की है।

राज्यपाल श्री पटेल द्वारा पतंजलि योगपीठ ट्रस्ट के संस्थापक सचिव आचार्य बालकृष्ण से महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन के दीक्षांत समारोह में चर्चा के दौरान इस विषय पर विचार विमर्श किया गया। राज्यपाल श्री पटेल ने आचार्य बालकृष्ण को राष्ट्रीय सिकल सेल मिशन के तहत किए जा रहे उपचार और पुनर्वास प्रयासों के बारे में भी बताया। उल्लेखनीय है कि पतंजलि योगपीठ ट्रस्ट के संस्थापक सचिव बालकृष्ण को महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय उज्जैन द्वारा मानद उपाधि से सम्मानित किया गया है।

स्कूल चलें हम अभियान आज से, मुख्यमंत्री करेंगे शुभारंभ

भोपाल, देशबन्धु। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव एक अप्रैल मंगलवार को शासकीय नवीन उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय अरेरा कॉलोनी (ओल्ड कैंपियन) में प्रात: 9 बजे स्कूल चलें हम अभियान - 2025 का शुभारंभ करेंगे। इस अवसर पर राज्य स्तरीय प्रवेशोत्सव कार्यक्रम भी होगा। कार्यक्रम में जनजातीय कार्य, लोक परिसम्पत्ति प्रबंधन, भोपाल गैस त्रासदी राहत एवं पुनर्वास मंत्री डॉ. कुंवर विजय शाह, स्कूल शिक्षा एवं परिवहन मंत्री उदय प्रताप सिंह और सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्री चैतन्य कुमार काश्यप भी मौजूद रहेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव के स्कूल चलें हम अभियान कार्यक्रम के डिजिटल प्लेटफार्म पर लाइव प्रसारण की व्यवस्था भी की गई है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव कार्यक्रम में नव प्रवेशी विद्यार्थियों का स्वागत करेंगे। इसके साथ ही राष्ट्रीय स्तर के विभिन्न खेलों के प्रतिभावान विद्यार्थियों का सम्मान होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव स्कूल शिक्षा विभाग के शिक्षा पोर्टल 3.0 का शुभारंभ करेंगे। प्रदेश में करीब 92 हजार सरकारी स्कूल हैं। इनमें प्रायमरी, मीडिल, हाई और हायर सेकण्डरी स्कूल हैं। इन स्कूलों में लगभग 85 लाख बच्चे अध्ययनरत हैं।

सीएमएचओ ने सेवा सदन में किया यूरोलॉजी शिविर का अवलोकन

अब तक कुल 70 रोगियों के ऑपरेशन हुए

संतहिरदाराम नगर, देशबन्धु। भोपाल के सीएमएचओ डॉ. प्रभाकर तिवारी ने आज सेवा सदन नेत्र चिकित्सालय में लगे 100वें नि:शुल्क यूरोलॉजी शिविर में भर्ती मरीजों के स्वास्थ्य की जानकारी ली तथा उन्हें यहां मिली चिकित्सा सेवाओं और सुविधाओं के सम्बंध में पूछताछ की ।

डॉ. तिवारी ने षिविर में सेवा दे रहें यूरोलॉजिस्ट्स, रेडियोलॉजिस्ट्स, फिज़ीशियन्स, पैरामेडिकल कर्मचारियों, सेवादारों और ट्रस्टीगण से भी बातचीत की । इस अवसर पर मैनेजिंग ट्रस्टी ए.सी. साधवानी ट्रस्टीगण सुरेश आवतरामानी, तुलसीदास आडवानी, राजकुमार मूलचंदानी, संत सेवक एल.सी. जनियानी और डॉक्टर्स सीएमएचओ के साथ थे । डॉ. तिवारी ने शिविर आयोजन पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए अस्पताल के विज़िटर्स बुक में लिखा कि यहां सेवारत डॉक्टर्स तथा पैरामेडिकल कर्मचारियों के सेवाकार्य को देखकर अपार आनन्द की अनुभूति हुई । ऐसी ही संस्थाओं के लिये गोस्वामी तुलसीदास जी लिखकर गये है कि परहित सरिस धर्म नहिं भाई । डॉ. तिवारी ने सेवा सदन नेत्र चिकित्सालय के सेवाकार्यों के लिये शुभकामनाएं दी । उन्होंने वार्ड में भर्ती सभी मरीजों के पास जाकर उनकी कुशलक्षेम पूछी । सेवा सदन नेत्र चिकित्सालय में यूरोलॉजी षिविर में दूसरे दिन आज 30 मरीजों के ऑपरेशन किये गये। इन्हें मिलाकर अब तक मूत्र व्याधियों से पीड़ित कुल 70 मरीजों के ऑपरेशन किये जा चुके हैं ।

बधाई और अखाड़ा नृत्य के साथ ही गायन ने किया मंत्र मुग्ध

भोपाल, देशबन्धु। मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय में नृत्य,गायन एवं वादन पर केंद्रित संभावना गतिविधि में 30 मार्च को राजेश चौरसिया एवं साथी- सागर द्वारा बधाई नृत्य देवेन्द्र डेहेरिया एवं साथी सिवनी द्वारा अखाड़ा, नमन तिवारी एवं साथी नर्मदापुरम द्वारा कबीर गायन प्रस्तुति दी गई। इन प्रस्तुतियों में उपस्थित दर्शकों एवं श्रोताओ को मंत्र मुग्ध कर दिया।

गतिविधि में राजेश चौरसिया एवं साथी, सागर द्वारा बधाई नृत्य प्रस्तुत किया गया। बुन्देलखण्ड अंचल में जन्म विवाह और तीज-त्यौहारों पर बधाई नृत्य किया जाता है। मनौती पूरी हो जाने पर देवी-देवताओं के द्वार पर बधाई नृत्य होता है।

90 दिन चलेगा जल गंगा संवर्धन अभियान, प्रतिदिन लोकार्पित की जाएंगी जल संरचनाएं

जल संरक्षण आज की महती आवश्यकता

भोपाल, देशबन्धु। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि लोकतंत्र में जनता ही सरकार की सबसे बड़ी ताकत है। जनता को साथ लेकर प्रदेश के चहुँमुखी विकास की ओर हम आगे बढ़ रहे हैं। वित्तीय वर्ष 2025-26 के बजट निर्माण में भी प्रदेश की जनता को जोड़ते हुए उनसे सुझाव आमंत्रित किये गये। प्रदेश में सभी प्रमुख त्यौहार भी प्रदेशवासियों को साथ लेकर मनाने की शुरूआत की गई है। अब 30 मार्च से प्रारंभ हुए राज्य स्तरीय जल गंगा संवर्धन अभियान में भी जन-भागीदारी को प्राथमिकता के साथ जोड़ा गया है। जल संकट को दूर करने बारिश के जल को अधिक से अधिक संग्रहण करने 30 मार्च से प्रांत व्यापी जल गंगा संवर्धन अभियान की शुरूआत की गई है। यह अभियान 30 जून तक निरंतर जारी रहेगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जल गंगा संवर्धन अभियान का राज्य स्तरीय शुभारंभ महाकाल की नगरी उज्जैन में क्षिप्रा नदी के तट से किया गया। इसमें राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल और केन्द्रीय विधि एवं न्याय राज्य मंत्री डॉ. अर्जुनराम मेघवाल भी शामिल हुए। मुख्यमंत्री यादव ने कहा कि प्रदेश में वर्षा जल की बूंद-बूंद बचाने का जल गंगा संवर्धन महा अभियान ग्रीष्म ऋतु में 30 जून तक 90 दिन से अधिक समय तक लगातार चलेगा। इस दौरान प्रति दिन छोटी-बड़ी जल संरचनाएं निर्मित कर लोकार्पित की जाएंगी। जल संरक्षण के इस अभियान से प्रदेश के भू-जल स्तर में सुधार आएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने नागरिकों से मानवता ही नहीं समूची प्रकृति का जीवन अस्तित्व बचाए रखने के लिए पानी की बूंद-बूंद बचाने का आह्वान किया है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार जन, जल, जंगल, जमीन और वन्य प्राणियों के संरक्षण के लिए संकल्पित है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का जल संरक्षण अभियान देशभर में एक व्यापक जन-आंदोलन बन चुका है। राज्य सरकार भी खेत का पानी खेत में-गांव का पानी गांव में के सिद्धांत पर जल संरक्षण की दिशा में अभियान चला रही है। उन्होंने कहा कि जल गंगा संवर्धन अभियान में जल संरक्षण को प्रोत्साहित करने के लिए वर्षा जल संचयन, जल स्रोतों का पुनर्जीवन और जल संरक्षण तकनीकों को अपनाने पर विशेष जोर दिया जा रहा है। प्रदेश सरकार का यह अभियान जल संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। उन्होंने सभी संबंधित विभागों को निर्देश दिए हैं कि वे जल संरक्षण से जुड़ी योजनाओं को प्राथमिकता देकर अधिक से अधिक लोगों को अभियान से जोड़ें।

हादसे मंडी बोर्ड कर्मचारी की मौत

पोता-पोती को घुमाने निकले थे, बाइक सवार ने टक्कर मारी, ऑटो ने कुचल दिया

भोपाल,देशबन्धु। चिकलोद रोड पर शनिवार रात एक बाइक सवार ने एक्टिवा चालक मंडी बोर्ड कर्मचारी को टक्कर मार दी। उनके जमीन पर गिरते ही पीछे से आ रहे ऑटो ने उन्हें कुचल दिया। सिर में गंभीर चोट आने से इलाज के दौरान रविवार दोपहर उनकी मौत हो गई। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

जहांगीराबाद पुलिस के मुताबिक देवराज गौतम पुत्र चोखलाल गौतम उम्र 57 वर्ष गीतांजली काम्प्लैक्स इंद्रपुरी में रहते थे और अरेरा हिल्स स्थित मंडी बोर्ड कार्यालय में बतौर भृत्य काम करते थे। वे शनिवार रात को दो मासूम पोते और एक पोती को घुमाने निकले थे। जहांगीराबाद बाजार से उन्होंने सामान खरीदा। इसके बाद में घर के लिए लौट रहे थे। इसी दौरान जिंसी चौराहा के करीब चिकलोद रोड पर एक बाइक सवार ने एक्टिवा को टक्कर मार दी। इस हादसे में देवराज के जमीन पर गिरते ही पीछे से आ रहे ऑटो ने उन्हें कुचल दिया, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गए। हालांकि तीनों मासूमों को मामूली चोट आई। घटना की सूचना मिलते ही मौके पर पहुंचे परिचित उदय दास गंभीर घायल देवराज को पास के अस्पातल ले गए, लेकिन वहां भर्ती करने से इनकार कर दिया गया। इसके बाद हमीदिया अस्पताल पहुंचाया, जहां रविवार दोपहर इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। अस्पताल से मिली सूचना के बाद पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए पहुचांया और पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों के हवाले कर दिया। साथ ही मर्ग दर्ज कर जांच शुरु कर दी है।थाना प्रभारी आशुतोष उपाध्याय ने बताया कि घटना स्थल के करीब के सीसीटीवी कैमरों को खंगाला जा रहा है। हादसे के सही कारणों का खुलासा जांच के बाद हो सकेगा। फिलहाल मर्ग कायम कर जांच शुरू की है।

सरेराह सिर में डंडा मारकर लूट

भोपाल,देशबन्धु। अल्पना तिराहा पुलिस चौकी से महज 50 मीटर की दूरी पर यात्री से लूट का मामला सामने आया है। हरे रंग के ऑटो से आए तीन बदमाशों ने युवक को रोका। उससे नकदी और मोबाइल देने की बात कही। पीड़ित ने विरोध किया तो आरोपियों ने सिर में डंडा मार दिया। इसके बाद मोबाइल छीनकर भाग निकले। बाद में मौके पर पहुंची पुलिस ने डायल 100 से लहूलुहान युवक को इलाज के लिए अस्पताल पहुंचाया। फिलहाल एफआईआर दर्ज नहीं हुई है। फरियादी बसंत प्रताप सिंह राजपूत ने बताया कि वह विदिशा के रहने वाले हैं। वहीं किसानी करते हैं, घूमने के इरादे से शनिवार की सुबह भोपाल आए थे। यहां करोंद में रहने वाले दोस्त के साथ घूमे और रात के समय घर निकलने के लिए भोपाल स्टेशन जा रहे थे। रात करीब 7ः35 बजे अल्पना तिराहा पुलिस चौकी के करीब हरे रंग के ऑटो में सवार तीन युवक आए। उन्होंने ऑटो खड़ा किया और दो युवक मेरे करीब आए। आरोपियों ने मोबाइल पर्स देने की मांग की। विरोध किया इसी बीच एक बदमाश ने ऑटो से डंडा निकाला और सिर में मार दिया।

पुलिस चौकी के करीब यात्री को बनाया निशाना

अधिकारियों की कमी से कार्य हो रहा है प्रभावित

प्रशासनिक पदों के लिए 1366 आईएएस अधिकारियों की कमी

- संसदीय समिति ने पदों को जल्द भरने की बताई जरूरत
- चन्द्रमौली समिति की रिपोर्ट को लागू करने की सिफारिश

नई दिल्ली, एजेंसी। संसद की एक समिति ने कहा है कि देश में इस समय भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) के पदों की जरूरत के हिसाब से 1316 आईएएस अधिकारियों की कमी है जिससे विभिन्न स्तरों पर प्रशासनिक कार्य और शासन प्रभावित हो रहा है। राज्य सभा सदस्य बृज लाल की अध्यक्षता वाली लोक शिकायत , विधि और न्याय विभाग से संबंधी संसदीय समिति ने मंत्रालय की 2025-26 की अनुदान मांगों पर राज्य सभा में पिछले दिनों प्रस्तुत अपने प्रतिवेदन में कहा है, 'इन रिक्त पदों को भरने की तत्काल आवश्यकता को देखते हुए भर्ती प्रक्रिया में तेजी लाने और लोक प्रशासन की बढ़ती मांगों को पूरा करने के लिए त्वरित कार्रवाई की आवश्यकता है। समित ने इस संदर्भ में सरकार से आईएएस अधिकारियों की भर्ती के विषय में चन्द्रमौली समिति की रिपोर्ट का अध्ययन कराने तथा उसे जल्द से जल्द लागू कराने की सिफारिश की है।

समिति ने आईएएस कोटे में रिक्तियों का समय से निर्धरण सुनिश्चित करने के लिए कार्मिक एवं प्रशिक्षण विभाग को राज्यो के लिए एक आनलाइन ट्रैकिंग और प्रस्तुतीकरण पोर्टल शुरू करने का सुझाव दिया है। इससे राज्य सरकारे अपने प्रस्तावों को आन लाइन प्रस्तुत करने के साथ-साथ उस पर प्रगति की मॉनिटरिंग कर सकेंगी और अनुस्मारक प्रस्तुत कर सकेंगी। समिति का यह भी कहना है कि विभाग को विलंबित प्रस्तुतियों के लिए दंड प्रणाली भी रखनी चाहिए। उदाहरण के लिए समिति का कहना है कि जो राज्य लगातार समय सीमा को पूरा न करें उन राज्यों से प्रोन्नति कोटा के लिए विचार न किया जाए। समिति ने यह भी कहा है कि आरक्षित श्रेणी की रिक्तियों के लिए आंकड़ों का संग्रह और भर्ती प्रक्रियाओ के समय पर और प्रभावी कार्यान्वयन की निगरानी करने के लिए विभाग को एक केंद्रीय निगरानी एवं समन्वय समिति स्थापित करनी चाहिए। समिति ने यह भी कहा है कि सभी आईएसएस अधिकारियों की ओर से उनकी अचल संपत्तियों के विवरण (आईपीआर) का दखिला समय पर सुनिश्चित कराने के लिए एक केंन्द्रीय निगरानी एवं अनुपालन तंत्र स्थापित किया जाए।

अनुकूल स्थानों पर वर्षों से जमे पड़े अधिकारी

समिति ने पाया है कि इन सेवाओं के कई अधिकारी ऐसे हैं जो आर्थिक और संवेदनशील सूची में वर्गीकृत विभागों और मंत्रालयों में अनुकूल स्थानों पर आठ-आठ, नौ-नौ वर्ष से अधिक समय से जमे पड़े हैं जबकि इसी अवधि में इस दौरान उनके चार-चार, पांच-पांच संगठन प्रमुखों के तबादले हो चुके हैं। समिति ने कहा है,''इस प्रवृत्ति का आकलन किया जाना चाहिए। किसी विशेष सीट/स्थान पर लंबे समय तक रहने से भ्रष्टाचार बढ़ता है।

नीतीश सिर्फ मुखौटा, सरकार कुछ अधिकारी चला रहे : प्रशांत

किशनगंज, एजेंसी। बिहार में सोमवार को ईद धूमधाम से मनाई जा रही है। विभिन्न स्थानों पर बड़ी संख्या में लोग ईद की नमाज अदा करने पहुंचे। इधर, जनसुराज के सूत्रधार प्रशांत किशोर सोमवार को बिहार के किशनगंज में अंजुमन इस्लामिया ईद मिलन कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने कदम रसूल स्थित मदरसा अमजदिया ईदगाह में चादरपोशी की और ईद पर समाज में शांति, सद्भाव और एकता तथा लोगों के जीवन में खुशहाली की दुआ मांगी। ईद मिलन कार्यक्रम के बाद प्रशांत किशोर ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि पिछले कुछ सालों में नीतीश सरकार का इकबाल खत्म हो गया है। नीतीश कुमार शारीरिक रूप से थके हुए और मानसिक रूप से अस्वस्थ हैं। नीतीश कुमार खुद सरकार चलाने की स्थिति में नहीं हैं, बल्कि भाजपा ने उन्हें 13 करोड़ लोगों के ऊपर बैठा रखा है। प्रशांत किशोर ने कहा कि नीतीश कुमार सिर्फ मुखौटा हैं, जबकि दिल्ली में बैठी सरकार और उनके अधीन कुछ अधिकारी सरकार चला रहे हैं। उन्होंने कहा कि सरकार अमित शाह और उनके अधिकारियों द्वारा चला रही है।

CHANGE OF NAME

I , SHASHIBALA YADAV IS LEGALLY WEDDED SPOUSE OF NO - JC 572417Y RANK SUB NAME INDRAJEET YADAV SERVING IN 19 MAHAR HOME ADDRESS VILL - BANSPAR NUTAN , POST - PEPARPATI TIWARI, TEH - MAHARAJGANJ, DIST - MAHARAJGANJ, STATE - UTTAR PRADESH, PIN CODE - 273302 HAVE CHANGED MY NAME FROM SHASHIBALA YADAV TO SHASHIBALA DEVI IN MY ALL DOCUMENTS VIDE AFFIDAVIT DATED 01/04/2025 EXECUTED BEFORE DISTRICT COURT SAGAR M.P

CHANGE OF NAME

I ,USHA BHARAT SURYAWANSHI IS LEGALLY WEDDED SPOUSE OF ARMY NO - 4579790A RANK HAV CLK NAME SURYWANSHI BHARAT SHRAVAN SERVING IN TRG BN MRC C/O 56 APO HOME ADDRESS VILL - YENKI , POST - HONALI , TEH - UDGIR , DIST - LATUR , STATE - MAHARASHTRA , PIN CODE - 413517 HAVE CHANGED MY NAME FROM USHA BHARAT SURYAWANSHI TO USHA BHARAT SURYWANSHI IN MY HUSBAND SERVICE RECORD. VIDE AFFIDAVIT DATED 01/ 04/ 2025 EXECUTED BEFORE DISTRICT COURT SAGAR MP

CHANGE OF NAME

WE , SHRAVAN (FATHER)& LAXIMIBAI (MOTHER) ARE PARENTS OF ARMY NO - 4579790A RANK HAV CLK NAME SURYWANSHI BHARAT SHRAVAN SERVING IN TRG BN MRC C/O 56 APO HOME ADDRESS VILL - YENKI , POST - HONALI , TEH - UDGIR , DIST - LATUR , STATE - MAHARASHTRA , PIN CODE - 413517 HAVE CHANGED MY NAME FROM SHRAVAN TO SHRAVAN NAGORAO SURYAWANSHI AND CHANGED FROM LAXIMIBAI TO LAXMIBAI SHRAVAN SURYAWANSHI IN MY SON SERVICE RECORD. VIDE AFFIDAVIT DATED 01/04/2025 EXECUTED BEFORE DISTRICT COURT SAGAR MP

CHANGE OF DOB

I , MANISHA VIVEK MASUGADE SPOUSE OF NAME MASUGADE VIVEK KRISHNA ADDRESS AT - VTC - NER , PO - NER , SUB DIST - KHATAV, DIST - SATARA , STATE - MAHARASHTRA, PIN - 415502 HAVE CHANGED MY DOB FROM 09/08/1987 TO 09/08/1988 AFFIDAVIT DATED 01/04/2024 BEFORE DISTRICT COURT SAGAR M.P

CHANGE OF DOB

I , BIPIN BIHARI DAS FATHER OF NO - JC 573025X RANK NB SUB NAME RANAJIT DAS 18 MAHAR SERVING IN HQ 7 SECTOR RR C/O 56 APO HOME ADDRESS AT - 134, THE NEIGHBOURHOOD GUNDLAPOCHAMPALLY , GUNDLAPOCHAMPALLE , POCHAMPALLY , MEDCHAL , K.V. RANGAREDDY, TELANGANA, 500014 I HAVE CHANGED MY DOB FROM 19/07/1944 TO 03/05/1949 IN MY ALL DOCUMENTS VIDE AFFIDAVIT DATED 01/04/2025 EXECUTED BEFORE DISTRICT COURT SAGAR M.P

CHANGE OF NAME & DOB

I , SUDMINI DAS IS MOTHER OF NO - JC 573025X RANK NB SUB NAME RANAJIT DAS 18 MAHAR SERVING IN HQ 7 SECTOR RR C/O 56 APO HOME ADDRESS AT - 134, THE NEIGHBOURHOOD GUNDLAPOCHAMPALLY , GUNDLAPOCHAMPALLE , POCHAMPALLY , MEDCHAL , K.V. RANGAREDDY, TELANGANA, 500014 I HAVE CHANGED MY NAME FROM SUDMINI DAS TO SOUDAMINI DAS AND CHANGED MY DOB FROM 28/06/1952 TO 18/09/1950 IN MY ALL DOCUMENTS VIDE AFFIDAVIT DATED 01/04/2025 EXECUTED BEFORE DISTRICT COURT SAGAR M.P

CHANGE OF NAME

I , BACHI DEVI IS MOTHER OF NO - JC 573612H RANK NB SUB CLK NAME PANKAJ KUMAR SERVING IN TRG BN MRC C/O 56 APO HOME ADDRESS VILL - GHUSUKPUR , POST - CHATAUNI , TEH - SHEOHAR, DIST - SHEOHAR, STATE - BIHAR , PIN CODE - 843128 HAVE CHANGED MY NAME FROM BACHI DEVI TO BACHHI DEVI IN MY SON SERVICE RECORD. VIDE AFFIDAVIT DATED 01/04/2025 EXECUTED BEFORE DISTRICT COURT SAGAR MP

नई कृषि उपज मंडी परिसर में 1 करोड़ 98 लाख की लागत से बनाई 20 दुकानों का निर्माण

टीकमगढ़, देशबन्धु। जिले के सरकारी दफ्तरों में इन दिनों घटिया निर्माण कार्य की अनदेखी करना प्रशासनिक अधिकारियों का स्वभाव आदत बन चुकी है। करोड़ों रुपए की राशि से कराए गए निर्माण कार्यों में कृषि विभाग के जिम्मेवार अधिकारी से लेकर उपयंत्री और सहायक यंत्री की बढ़ती कमीशनखोरी की वजह से घटिया निर्माण करवाया गया है। खरगापुर कृषि उपज मंडी और नवीन मंडी देवपुर पर रोड निर्मित दुकानों का निर्माण हरिओम कंट्रंशन कंपनी जतारा द्वारा घटिया सामग्री का इस्तेमाल से करवाया था। हाल में उन दुकानों की हालात यह है कि कई दुकानों में दरारें पड़ चुकी है तो वहीं छत के सरिया देखने लगे है। वहीं मंडी परिसर में टीन शेड के चबूतरों की हालात तो जर्जर हो गई। देखा जाए पुरानी मंडी में लाखों की लागत से बनाए गए पार्क का भी कही नाम और निशान तक नहीं देख रहा है।

गौरतलब है कि खरगापुर नवीन किसी उपज मंडी में दुकानों का निर्माण कार्य चल रहा है। जिसका टेंडर हरिओम कंस्ट्रक्शन कंपनी जतारा को मिला था। नवीन कृषि उपज मंडी परिसर में 20 दुकानों निर्माण कार्य स्वामित्व योजना के तहत 1 करोड़ 98 लाख लगभग लागत से दुकानों का निर्माण करवाया जा रहा है। टेंडर ठेकेदार ने पेटी ठेकेदार देकर दुकानों का निर्माण क्रेशर निकलने वाली पत्थर डस्ट का इस्तेमाल कॉलम भराई और दीवारों की चुनाई कराई गई। वहीं नदी नालों से निकलने वाली मिट्टी युक्त रेता का उपयोग कर रहे है। वहीं विभाग के जिम्मेदार अधिकारियों की बढ़ती कमीशखोरी की वजह से घटिया युक्त सामग्री उपयोग कर दुकानों निर्माण कार्य धड़ल्ले से कर रहे है।

इनका कहना है

कृषि उपज मंडी परिसर में स्वामित्व योजना के अंतर्गत दुकानों को निर्माण कार्य चल रहा है। गुणवत्ता के बारे में जिन व्यापारियों की दुकानों का निर्माण के संबंध में जानकारी ले सकते हैं।

लक्ष्मण गौड
सब इंजीनियर कृषि उपज मंडी खरगापुर

गोदाम के बाहर खड़ी कार में आग लगी, गैस सिलेंडर रिफिलिंग के दौरान हादसा

टीकमगढ़, देशबन्धु। रविवार देर रात दो जगहों पर आग लगने की घटनाएं सामने आईं। पहली घटना रात करीब साढ़े ग्यारह बजे मां लक्ष्मी पैलेस के पास स्थित कुशाग्र जैन के घर में बने गोदाम के बाहर हुई। यहां खड़ी एक कार में अचानक आग लग गई। दूसरी घटना पुरानी टिहरी में बने बंडा नाले में हुई। आसपास के लोग नाले में कचरा फेंक देते हैं। देर रात कचरे में आग लग गई। इस दौरान पूरे मोहल्ले में अफरा तफरी का माहौल रहा। हालांकि दोनों घटनाओं में कोई जनहानि नहीं हुई है। मंडी रोड पर मां लक्ष्मी पैलेस होटल के बगल में बनी गली में कुशाग्र जैन ने गोदाम बना रखा है। रविवार रात गोदाम के बाहर अपनी कार में घरेलू गैस सिलेंडर की रेसलिंग कर रहा था। इसी दौरान आग लग गई। घटना की सूचना मिलते ही एसपी मनोहर सिंह मंडलोई और एसडीओपी राहुल कटरे को जानकारी दी गई। टीआई पंकज शर्मा पुलिस बल के साथ तुरंत मौके पर पहुंचे और आग पर काबू पाया। स्थानीय लोगों का कहना है कि घरेलू गैस सिलेंडर की रिफिलिंग के दौरान हादसा हुआ। स्थानीय लोगों ने पुलिस और दमकल विभाग को सूचना दी, जिन्होंने मौके पर पहुंचकर आग को बुझाया। जांच में सामने आया कि रिहायशी कॉलोनी में एक व्यापारी ने अवैध रूप से गोदाम बना रखा है। कोतवाली थाना क्षेत्र में हुई इन घटनाओं में बड़ी दुर्घटना होते-होते टल गई। पुलिस मामले की जांच कर रही है और अवैध गोदाम के खिलाफकार्रवाई की तैयारी में है।

विवाह वाटिका के बगल में लगी आग, आधे खेत की फसल जलकर खाक

जतारा, देशबन्धु। नगर के ग्रीन वाटिका स्थित कुंड पहाड़ी के मंदिर के पास नगर एव आसपास की ग्रामीण क्षेत्र की लोगों द्वारा विवाह आदि कार्यक्रम संपन्न किए जाते हैं। इसी कंपाउंड में एचडीएफसी बैंक भी स्थित है। उसी के बगल वाले खेत मे आज भीषण आग लग गयी, लेकिन मौके पर तुरंत आग बुझाने वाले अग्निशामक यंत्र भी नहीं मिले। फायर ब्रिगेड द्वारा बमुश्किल आग पर काबू पाया गया। सोमवार को 4 बजे के लगभग ग्रीन वाटिका के बगल में स्थित गेंहू के खेत में अचानक से आग लग गई। आग की चिंगारियां को देखकर आसपास के लोग एकत्र हो गए। किसानों ने किसी तरह आग पर काबू पाने के लिए प्रयास शुरू किया। इसी बीच घटना की जानकारी राजस्व विभाग के अधिकारी कर्मचारी तथा जतारा थाना पुलिस को मिलते ही तत्काल मौके पर नगर परिषद जतारा की फायर ब्रिगेड को मौके पर भेजा गया। किसी तरह से आग पर काबू पाया जा, जिससे आसपास के किसानों की फसलों भी बच गई। ग्रीन वाटिका के संचालक सिद्दीक खान के खेत में आग लग गई आग बुझाने के लिए बैरवार गांव के राममिलन यादव, सोनू पटेरिया जतारा नगर के हनीफ मसूरी, डॉ अंशुमान दीक्षित आदि के द्वारा आग बुझाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया गया है। जिससे किसान के खेत में लगी गेहूं की लगभग दो बीघा जलने के बाद बाकी बच गई है, और बड़ी घटना घटित होने से बच गई है। सदर पटवारी रवि दांगी ने बताया कि किसान के खेत पर पहुंच कर पंचनामा तैयार कर जांच प्रतिवेदन तहसीलदार को प्रस्तुत कर आर्थिक सहायता के लिए प्रकरण तैयार किया जाएगा।

पुलिस टीम ने जुए के फड़ पर छापामार पकड़े 8 जुआरी

टीकमगढ़, देशबन्धु। दिगौड़ा पुलिस ने रविवार की शाम को मुखबिर की सूचना पर ग्राम बम्होरी की दलित बस्ती में खेले जा रहे जुए के फड़ पर छापामार कार्यवाही की गई, जिसमें जुआ खेल रहे 8 जुआरियों को पुलिस ने मौके से पकड़ा है। पुलिस ने इन जुआरियों के खिलाफ मामला दर्ज किया है। थाना प्रभारी नीरज लोधी ने बताया कि 30 मार्च की शाम को मुखबिर की सूचना पर ग्राम बम्होरी की दलित बस्ती में छापामार कार्यवाही कर जुआ खेलते 8 आरोपी सोनू अहिरवार, करन अहिरवार, जितेन्द्र कुमार जैन, शिवचरण अहिरवार, राकेश अहिरवार,अरुण उर्फ दीपक अहिरवार, पुष्पेंद्र अहिरवार निवासी बम्होरी एवं मनीराम अहिरवार निवासी शुक्लान टोरिया को पकड़ा है। पुलिस टीम ने मौके से 52 ताश के पत्ते सहित कुल 6230 जप्त किए। पुलिस ने उक्त आरोपियों के विरुद्ध धारा 13 जुआ एक्ट का कायम कर विवेचना में लिया गया। इस कार्यवाही में थाना प्रभारी उप निरीक्षक नीरज कुमार लोधी, सहायक उपनिरीक्षक कल्याण सिंह, प्रधान आरक्षक विजय सिंह घोष, आरक्षक कपिल शर्मा सहित थाना स्टाफ की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

कलेक्टर, एसपी ने ईद पर मस्जिदों सहित शहर में सुरक्षा व्यवस्था का लिया जायजा

टीकमगढ़, देशबन्धु। कलेक्टर विवेक श्रोतिय एवं पुलिस अधीक्षक मनोहर सिंह मंडलोई द्वारा सयुंक्त रूप से शहर में ईद के त्योहार के अवसर पर मस्जिदों के बाहर एवं शहर में लगाई गई सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लेते हुए भ्रमण किया गया। जिसमें शहर में सुरक्षा के लिए लगाए गए फिक्स पाइंट्स के पुलिस बल, मस्जिदों पर लगे सुरक्षा बल एवं पेट्रोलिंग पार्टियों को शांति एवं कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए आवश्यक दिशा निर्देश दिए। इसी क्रम मे कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक द्वारा मुस्लिम धर्मावलंबियों से मुलाकात की एवं उन्हें ईद की मुबारकबाद दी। साथ ही ईद के त्योहार को सभी के साथ मिलकर शांति पूर्वक मनाने की अपील की गई। कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक द्वारा आमजन से अपील की है कि आगामी त्योहार शांति पूर्वक मनाए। एवं किसी भी प्रकार की आपत्तिजनक व संदिग्ध गतिविधि में शामिल न हों।

शांति और सद्भाव के साथ मनाया गया ईद उल फितर का त्यौहार

बल्देवगढ़,देशबन्धु। नगर में मुस्लिम समुदाय के द्वारा शांति और सौहाद्र के साथ ईद उल फित्तर का त्यौहार मनाया गया।जिसमें मुस्लिम समुदाय के लोगों के द्वारा सोमवार सुबह बजे एकत्रित होकर ईदगाह मस्जिद पहुंचे। यहां पर मुस्लिम रीति रिवाज अनुसार नमाज अदा की गई। इसके बाद समस्त मुस्लिम समुदाय के लोगों के द्वारा एक दूसरे को गले लगाकर ईद की मुबारकबाद दी और अमन चौन की दुआ मांगी। मौके पर पुलिस प्रशासन की चाक चौबंद व्यवस्था रही। समस्त धर्मों के लोग ईदगाह मस्जिद पहुंचे। जहां पर मुस्लिम समाज के लोगों को ईद की मुबारकबाद दी और एक दूसरे को गले लगाया। साथ ही पुलिस आरक्षक जितेंद्र राजपूत, अनुज कोरी, मुकेश राय के द्वारा समस्त मुस्लिम समुदाय के लोगों को फलाहार वितरित किए और ईद की मुबारकबाद दी। मौके पर नगर परिषद अध्यक्ष प्रतिनिधि दीपक मिश्रा, प्रेमलाल बुनकर एवं नगर के प्रशासनिक अधिकारी कर्मचारी मौजूद रहे।

अकीदत के साथ मनाई ईद अमन और चैन के लिए मांगी दुआ

पलेरा, देशबन्धु। पलेरा सहित पूरे भारत में ईद उल फित्तर का पर्व मनाया गया। मुस्लिम धर्म का पवित्र त्योहार ईद उल फित्तर जिसे स्थानीय भाषा में मीठी ईद भी कहा जाता है। मुस्लिम समुदाय के लोगों के द्वारा इस पर्व पर नगर की ईदगाह मस्जिद में एकत्रित होकर नमाज़ अदा की गई और देश के अमन और चौन के लिए दुआ मांगी गई। साथ ही नमाज के बाद मुस्लिम समुदाय के लोगों ने एक दूसरों से गले मिलकर ईद की मुबारकबाद दी। जानकारी के अनुसार पलेरा नगर की ईदगाह मस्जिद में 8.25 पर ईद की नमाज अदा की गई। पेश इमाम हाफिज़ मुजीब रजा के द्वारा लोगों को ईद की मुबारकबाद दी। इस मौके पर हाजी जमील अहमद, तुफैल पठान, हाजी इकबाल, रफीक खान, अजीज खान, वाहिद खान, राशिद खान, अब्दुल लतीफ, अनीश खान, वफाती खान माते, समीर खान, अहमद खान, इमरान खान, एहसान मंसूरी, मुकीम शाह, शाहिद सौदागर, नासिर अली, शमशेर आलम सहित सैकड़ों की संख्या में मुस्लिम समुदाय के लोग मौजूद रहे। साथ ही पुलिस प्रशासन की भी चॉक चौबंद व्यवस्था देखने को मिली। वहीं पूर्व नगर परिषद अध्यक्ष सुनील खटीक, नगर परिषद अध्यक्ष प्रतिनिधि विनोद वर्मा, पार्षद अभय मोर, विश्व दीप सिंह, रामकुमार यादव सहित अनेक लोगों ने मस्जिद के बाहर आकर मुस्लिम समुदाय के लोगों से गले मिलकर ईद की मुबारकबाद दी। साथ ही थाना प्रभारी भी इस मौके पर मौजूद रहे।

कुएं में गिरने से 35 वर्षीय शख्स की मौत

पलेरा, देशबन्धु। खजरी चौकी के अंतर्गत आने वाले ग्राम जवाहरपुरा के वीरा हार में एक 35 वर्षीय शख्स बब्लेश अहिरवार की कुएं में गिरने से मौत हो गई। घटना बीती रात्रि तकरीबन 10 बजे की बताई जा रही है। स्थानीय लोगों ने बताया कि उक्त शख्स गांव में रहकर मजदूरी का कार्य करता था और शराब का नशा भी करता था। शराब के नशे में उक्त शख्स कुएं में गिर गया, जिससे उसकी मौत हो गई। जैसे ही इसकी जानकारी खेत मालिक को लगी, तो उसके द्वारा इसकी सूचना पुलिस को दी गई। मौके पर पहुंची पुलिस के द्वारा शव को कुएं से बाहर निकाल कर पंचनामा की कार्रवाई की गई। पंचनामा की कार्रवाई के बाद शव को पीएम के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पलेरा लाया गया। जहां पर शव का पीएम किया गया। वहीं पीएम के बाद शव को परिजनों के सुपुर्द किया गया है। फिलहाल पुलिस के द्वारा मामले की जांच की जा रही है।

अवैध हथियार लिए घूम रहे व्यक्ति को पुलिस ने किया गिरफ्तार

पलेरा, देशबन्धु। पुलिस अधीक्षक महोदय मनोहर सिह मण्डलोई व्दारा एक विशेष अभियान के तहत अवैध हथियार एवं फायर आर्म्स के विरूद्ध कार्यवाही करने के लिए एक विशेष अभियान चलाया जा रहा है। थाना पलेरा पुलिस को बडी सफलता मिली है। पुलिस को मुखबिर द्वारा प्राप्त सूचना के आधार पर नरसिंह मंदिर के पास ग्राम खुमानगंज से आरोपी जयसिंह यादव पिता छिदू यादव उम्र 35 साल निवासी ग्राम खुमानगंज थाना पलेरा को लोहे की तलवार लिये गिरफ्तार किया। पुलिस ने धारा 25(1)(वी) आम्स एक्ट का अपराध पंजीवध्द किया जाकर आरोपी को न्यायालय पेश किया। कार्यवाही मे निरी. मनीष मिश्रा थाना प्रभारी पलेरा, सन्तोष सिह गौड, मनमोहन रैदास, रमाशंकर कुशवाहा, दीपक मिश्रा, लक्ष्मण पटेल, गनपत, कुलदीप चतुर्वेदी, ललित कुशवाहा, अजय राजपूत, ज्ञान सिह सेगर की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

सरकारी जमीन पर सरपंच, सचिव ने नियम विरुद्ध करवाया कपिलधारा कूप का निर्माण

टीकमगढ़, देशबन्धु। बल्देवगढ़ जनपद क्षेत्र की आने वाली ग्राम पंचायत पंचायतों में अनियमितताएं एवं भ्रष्टाचार करने के नए-नित मामले देखने को मिल रहे हैं कि ग्राम पंचायत चौबारा में सरपंच घन्सु कुशवाहा, सचिव सुंदरलाल असाटी और उपयंत्री की साठगांठ से सरकारी जमीन पर कपिलधारा कूप निर्माण की सरकारी राशि बंदरबांट करने की मंसा से कूप निर्माण कार्य करवाया गया है। उल्लेखित है, कि मामला ग्राम पंचायत चौबारा निवासी श्रीमति फुलिया बाई पत्नी तिजिया कुशवाहा का वर्ष 2015-16 में मनरेगा योजना के तहत कपिल धारा कूप निर्माण कार्य की स्वीकृत राशि 3 लाख 48 हजार की लागत से स्वीकृत था। लेकिन हितग्राही ने सरकारी भूमि पर नियम विरुद्ध तरीके से कपिलधारा कूप निर्माण कार्य करवाया गया। शिकायतकर्ता संजय शर्मा ने बताया कि खरगापुर तहसीलदार को सीमाकंन करवाया जाने के लिए आवेदन किया था। जिसमें खरगापुर तहसीलदार ने राजस्व अधिकारी और हल्का पटवारी द्वारा मौके जाकर चारों दिशाओं को मिलाकर सीमाकंन कराया था। जिसमें चौबारा हल्का पटवारी प्रतिवेदन में भूमि खसरा नम्बर 179/2 में शासकीय जमीन पर कपिलधारा कूप निर्माण करवाया गया है। जिसकी शिकायत ग्रामीणों ने खरगापुर तत्कालीन तहसीलदार लेकर कलेक्टर तक की।

लेकिन विभाग के जिम्मेदार अधिकारियों ने कोई महत्वपूर्ण कदम नहीं उठाए गए, इससे प्रतीत होता है कि सरपंच-सचिव की मिलीभगत से कपिलधारा कूप निर्माण की राशि बंदरबांट कर ली गई है। इस संबंध में ग्रामीणों ने कपिलधारा कूप निर्माण कार्य की निपक्ष जांच करने की मांग की। इस संबंध में प्रभारी जनपद सीईओ बल्देवगढ़ एसडीएम भारती मिश्रा से मोबाइल लगाने का प्रयास किया तो मोबाइल की बैल बजती रही है।

दिगौड़ा से लापता युवक को पुलिस ने किया दस्तयाब

टीकमगढ़, देशबन्धु। दिगौड़ा थाना क्षेत्र के अंतर्गत देवखा गांव से 21 वर्षीय युवक परिजनों को बिना बताए कहीं चला गया था। परिजनों की रिपोर्ट पर पुलिस ने गुमशुदगी दर्ज करते हुए लापता युवक की तलाश शुरू कर दी थी। पुलिस ने गुमशुदा युवक को 24 घंटे के अंदर दस्तयाब कर परिजनों के सुपुर्द किया। थाना प्रभारी नीरज लोधी ने बताया है कि थाना क्षेत्र के अंतर्गत देवखा गांव से 25 मार्च को 21 वर्षीय युवक अंकुल घोष दिगौड़ा से लापता हो गया था। परिजनों की रिपोर्ट पर पुलिस ने गुमशुदगी दर्ज की थी। पुलिस टीम ने गुमशुदा युवक को आज सोमवार को दस्तयाब कर परिजनों के सुपुर्द किया। युवक अंकुल ने पुलिस को बताया है कि उसके पिता खेत की फसल काटने को कह रहे थे, जिससे वह नाराज होकर परिजनों को बिना बताए घर से चला गया था।

वैश्य दिवस पर निकली वाहन रैली, समाज की एकजुटता का दिया संदेश

दमोह देशबन्धु। वैश्य महासम्मेलन मध्यप्रदेश के शिरोमणि संरक्षक उमाशंकर गुप्ता के निर्देशन में एवं प्रदेश अध्यक्ष सुधीर अग्रवाल के मार्गदर्शन में संपूर्ण मध्यप्रदेश में चैत्र नवरात्रि नव वर्ष, वैश्य दिवस के उपलक्ष्य में विशाल वाहन रैली, समापन पर संगोष्ठी का आयोजन हुआ। समाज की एकजुटता का संदेश दिया। जिसमें वैश्य समाज के संरक्षक पूर्व वित्त मंत्री दमोह विधायक जयंत मलैया ने भगवा झंडी दिखाकर रैली को रवाना किया। आयोजन में सर्वप्रथम श्री राम मंदिर मोरगंज में वैश्य महासम्मेलन के संभाग अध्यक्ष राकेश अग्रवाल, जिला प्रभारी पदम इटोरिया, जिला अध्यक्ष के. सी. अग्रवाल, नगर अध्यक्ष सत्यप्रकाश असाटी युवा संभाग प्रभारी जुगल अग्रवाल महिला प्रभारी विद्या असाटी, युवाध्यक्ष विकास अग्रवाल नगर अध्यक्ष अनिता अग्रवाल एवं सभी वैश्य बन्धुओं ने पूजन अर्चन भोग लगाकर प्रसाद वितरित किया।

वाहन रैली में देवी मां की सजीव झांकी रखी गई, जहां सभी मार्गों पर पूजन माल्यार्पण एवं स्वागत हुआ। वैश्य महासम्मेलन के इस आयोजन में सभी इकाई ने हिस्सा लिया। इस अवसर पर समाज के सैकड़ों लोगों ने एकत्रित होकर वैश्य समाज की एकता, समर्पण और समाजसेवा के प्रति प्रतिबद्धता को दोहराया।

जल गंगा संवर्धन अभियान में की कुआंताल जलाशय की सफाई

पन्ना,देशबन्धु । शासन के निर्देशानुसार आगामी तीन माह तक संचालित होने वाले जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत आज जिले के विभिन्न स्थानों पर जल स्रोतों की साफ -सफाई और संरक्षण का कार्य प्रारंभ किया गया। इस दौरान जागरूकता गतिविधियों के आयोजन के साथ ही जनप्रतिनिधि और अधिकारियों द्वारा आमजनों से अभियान में भागीदारी की अपील की गई। अभियान अंतर्गत रविवार को जल संसाधन संभाग पन्ना तथा केन-बेतवा संभाग क्रमांक 1 पवई के तत्वाधान में ग्राम बनौली स्थित कुआंताल जलाशय की साफ - सफाई और संरक्षण का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें विभागीय अधिकारी,कर्मचारियों सहित आमजनों ने भी उत्साहपूर्वक श्रमदान किया। इसके अतिरिक्त अजयगढ़ विकासखण्ड के ग्राम पंचायत देवगांव में जिला पंचायत सदस्य रचनादेवी पटेल एवं सरपंच पुष्पादेवी कोंदर ने ग्रामवासियों की सहभागिता से कलश यात्रा निकाली और जल संरक्षण एवं इसके महत्व के बारे में लोगों को जागरूक किया। ग्राम पंचायत भसूड़ा में अभियान के शुभारंभ पर ग्रामवासियों के सहयोग से रैली निकाली गई। इसी तरह शाहनगर विकासखण्ड की ग्राम पंचायत महगवां सरकार में जन प्रतिनिधियों और अधिकारियों ने प्राचीन तालाब के घाट की सफाई की। पवई की ग्राम पंचायतों में भी तालाबों से जलकुंभी एवं कचरा निकाला गया। इसी कड़ी में नगर परिषद अजयगढ़ की अध्यक्ष सीता गुप्ता द्वारा हजूरी तालाब के गहरीकरण का कार्य प्रारंभ कराया गया।

कांग्रेसजनों ने दी ईद की मुबारकबाद

दमोह देशबन्धु। जिला कांग्रेस कमेटी द्वारा कांग्रेसजनों के साथ फुटेरा वार्ड स्थित ईदगाह मैदान पहुंचकर मुस्लिम भाईयों को ईद की मुबारकबाद दी। उक्त अवसर पर जिला कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष रतनचंद जैन ने कहा कि इस महापर्व पर मुस्लिम भाईयों को जो अपना त्यौहार बड़ी ही सादगी से एवं मर्यादित होकर मनाते है। जिस पर उन्हें बहुत ही प्रसन्नता होती है, उनके गले लगकर उन्होंने मुबारकबाद दी। पूर्व विधायक अजय टंडन ने कहा कि हमारे समाज में अनेक जातियां है और सबके त्यौहार अलग अलग है। लेकिन सबकी इंसानियत एक है, सब का मजहब एक है, वह है एक दूसरे के काम आना। लेकिन कुछ फि रकापरस्त पार्टिया हमें आपस में लड़ाने का प्रयास करती है। इसके बाद पठानी मुहल्ला, गढ़ी मुहल्ला पहुंचकर भी मुस्लिम भाईयों को ईद की मुबारकबाद दी। इस अवसर पर पूर्व नगरपालिका अध्यक्ष मनु मिश्रा, आशीष पटेल, राजा रौतेला, रोशन नायक सहित अनेक कांग्रेसजनों की उपस्थिति रही।

ट्रांसफार्मर में लगी आग

दमोह/हटा देशबन्धु। पन्ना मुख्य मार्ग पर बीड़ी कारखाना के सामने लगे बिजली ट्रांसफार्मर में अचानक आग लग गई। देखते ही देखते आग उग्र हो गई और ट्रांसफार्मर जलने लगा । घटना सोमवार शाम करीब 4 बजे की बताई जा रही है। आग लगने की सूचना लोगों द्वारा हटा बिजली विभाग को दी गई है । शॉर्ट सर्किट से ट्रांसफार्मर में आग लगने की जानकारी सामने आई है।

श्रमदान कर की बावड़ी की सफाई

दमोह देशबन्धु। नगर परिषद पटेरा के वार्ड क्रमांक 08 में बावड़ी की सफाई जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत की गई। इस दौरान बावड़ी की सीढ़ियों का मलबा साफकिया गया। पानी में चोई, पॉलिथीन आदि को निकाल कर बावड़ी के ऊपर चारों तरफका कचरा ट्रॉली में भरकर कचरे का निस्तारण किया गया। अभियान में पार्षद गण, उपयंत्री, नगर के गणमान्य नागरिक, जन अभियान की नवांकुर संस्था के सदस्य, नगर परिषद के अध्यक्ष, सफाई कर्मियों ने मिलकर श्रमदान किया।

सेवानिवृत्त बीएस ठाकुर का हुआ सम्मान

दमोह देशबन्धु। 38 वर्ष तक स्वास्थ्य विभाग में सेवाएं देने वाले सेक्टर अभाना में पदस्थ एनएमए बी.एस. ठाकुर की सेवानिवृत्ति पर विद्या वाटिका गार्डन में लोधी क्षत्रिय समाज के जिला अध्यक्ष भाव सिंह लोधी के मुख्य आतिथ्य में आयोजित सम्मान व विदाई समारोह में उपस्थित मंचासीन अतिथियों ने उनके सेवा कार्यों की प्रशंसा कर शॉल, श्रीफल एवं उपहार भेंट कर उनका सम्मान किया। इस मौके पर जन प्रतिनिधियों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं परिजनों की मौजूदगी रही। समारोह का संचालन बीएम दुबे ने किया तथा आभार पदम सिंह ने माना।

सेवा निवृति पर दी विदाई

दमोह/तेंदूखेड़ा देशबन्धु। नगर के नगरपरिषद में पदस्थ काशीराम बाल्मीकि सफाई मित्र ने अपनी सेवाएं 42 वर्ष तक दी जिनका कार्य नगर परिषद में सेवाकाल के दौरान सराहनीय रहा । उनको नगरपरिषद में विदाई समारोह आयोजित कर भावभीनी विदाई देकर उपस्थित जनों ने उज्वल जीवन की कामना की। इस दौरान नगर परिषद अध्यक्ष सुरेश जैन और नपा सीएमओ प्रेमसिंह चौहान ने काशीराम को स्मृति चिह्न भेंटकर उनकी सेवाभाव को याद किया। इस दौरान नपा के समस्त कर्मचारी काशीराम के परिवारजन पार्षदगण उपाध्यक्ष लक्ष्मी नामदेव विशेष रूप से मौजूद रहे। नपा में बिदाई के बाद काशीराम को रथ पर बैठाकर उनके परिजनों ने नगर में जुलूस निकालकर उनका सम्मान किया।

सलकनपुर मंदिर का वीडियो सामने आने पर पुलिस ने दी चेतावनी

बुधनी, देशबन्धु। नवरात्रि के दौरान मां विजयासन देवी मंदिर सलकनपुर में सुरक्षा नियमों की अनदेखी का मामला सामने आया है। रविवार को सामने आए वीडियो में कुछ लोग रोपवे के ऊपर बैठे नजर आ रहे हैं। विडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हुआ जिसको लेक लापरवाही सामने आई है। इस मामले को लेकर एसडीओपी रवि शर्मा ने पुष्टि की है। रोपवे संचालक ने पुलिस को बताया कि ये उनके कर्मचारी थे, जो रोपवे की रूटीन चेकिंग कर रहे थे। हालांकि, पुलिस ने इस पर आपत्ति जताई क्योंकि कर्मचारी बिना सुरक्षा उपकरण और हेलमेट के रोपवे पर बैठे थे। नवरात्रि के इस पावन अवसर पर हजारों श्रद्धालु मंदिर पहुंच रहे हैं। मंदिर तक पहुंचने के लिए तीन मार्ग हैं सड़क मार्ग, सीढ़ी मार्ग और रोपवे। पुलिस ने रोपवे संचालक को कड़ी चेतावनी दी है। उन्हें स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं कि भविष्य में कोई भी कर्मचारी बिना सुरक्षा उपकरणों के रोपवे पर न बैठे।

नगर परिषद का आदेश, बंद रहेगी मांसाहार दुकानें

बुधनी, देशबन्धु। नगरीय प्रशासन ने सोमवार को नगर में संचालित मांसाहार दुकानें को तत्काल प्रभाव से बंद रखने के आदेश जारी कर दिए। इसको लेकर नगरीय प्रशासन की टीम ने सभी मांस विक्रेताओं को पत्र देकर सूचना दी गई। तो वहीं एक पत्र थाना प्रभारी को लिखकर मांसाहार दुकानें बंद करवाने में सहयोग की देने की बात कही। नवरात्र पर्व के दौरान रविवार को नगर में संचालित मांसाहार दुकानें खुली होने की सूचना पर नगर परिषद सीएमओ सन्तोष रघुवंशी स्टॉफ के साथ स्वयं जाकर दुकानें बंद रखने की अपील की थी तो वहीं देर शाम कुछ मांसाहार दुकानें खुली हुई थी। बता दें हाल ही में धार्मिक त्यौहारों को लेकर नगर में सकल हिन्दू समाज बैठक बुलाई थी जिसमें धार्मिक त्यौहारों को श्रद्धा और आस्था के साथ मनाए जाने को लेकर कार्यक्रमों पर चर्चा की गई थी। जिसमें नवरात्र, गुड़ी पड़वा, हनुमान जन्मोत्सव, रामनवमी, महावीर जयंती के पर्वों के दौरान नगर में स्थित मांसाहार दुकानें बंद रखने की मांग को लेकर सकल हिन्दू समाज के पदाधिकारियों ने तहसील कार्यालय में जाकर एसडीएम दिनेश सिंह तोमर को ज्ञापन के माध्यम से अवगत करवाया था। चैत्र नवरात्र से नववर्ष, गुड़ी पड़वा की शुरुआत होती है इस दौरान सलकनपुर स्थित प्राचीन देवी धाम मन्दिर में दूर दूर से श्रद्धालु माता के दर्शनों के लिए जाते हैं। इस दौरान नगर के मुख्य मार्ग पर स्थित मांसाहार दुकानों से श्रद्धालुओं की भावनाएं आहत न हो इसको लेकर नगर के हिंदू संगठनों ने मांसाहार दुकानें पूर्णत: बंद रखने के लिए स्थानीय प्रशासन को अवगत कराया था।

खड़ी गांव से जल गंगा संवर्धन अभियान का विधायक ने किया शुभारंभ

आष्टा, देशबन्धु । राज्य शासन के निर्देशानुसार 30 मार्च से 30 जून तक चलने वाले जल गंगा संवर्धन अभियान का विधायक गोपालसिंह इंजीनियर ने ग्राम पंचायत खड़ी हाट से शुभारम्भ किया गया । प्रत्येक ग्राम पंचायत में उक्त अभियान चलेगा । आज उक्त अभियान का ग्राम पंचायत गोपालपुर, चिंनोठा, चामसी, टीटोरिया, बैजनाथ, खामखेड़ा, सेवदा,शम्भूखेड़ी,बगड़ावदा में शुभारम्भ हुआ। जिसमें विधायक गोपालसिंह इंजीनियर,मनोहर पटेल,मंडल अध्यक्ष सुनील आर्य,पूर्व अध्यक्ष भगवानसिंह आदि उपस्तिथ रहे । सभी ग्राम पंचायतों में पीएम आवास योजना ग्रामीण के हितग्राहियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किये गये।इस अवसर पर बैजनाथ में लगभग 13 लाख के विकास कार्यों की भी सौगात लोकार्पण एवं भूमिपूजन कर विधायक श्री गोपालसिंह इंजीनियर ने दी। इस अवसर पर जल संरक्षण की सभी को शपथ दिलाई गई। इस अवसर पर विधायक श्री इंजीनियर ने अपने संबोधन में कहा की जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत जल संरक्षण एवं संवर्धन से संबंधित खेत, तालाब, अमृत सरोवर, परकोलेशन टैंक, डगवेल, तालाब जीर्णोद्धार, जनभागीदारी के कार्य, कूप एवं बाउंड्री मरम्मत के कार्य किए जाएंगे। जल गंगा संवर्धन अभियान का प्रमुख उद्देश्य जनभागीदारी से जल संरक्षण तथा संवर्धन सुनिश्चित करना है।

आयोजन को लेकर रघुवंशी समाज द्वारा घर-घर दिए जा रहे आमंत्रण

उदयपुरा के रघुवंशी भवन में अक्षय तृतीया पर होगा विवाह सम्मेलन

सिलवानी, देशबन्धु। रघुवंशी समाज के द्वारा आदर्श विवाह सम्मेलन को लेकर तैयारियां बड़ी जोरों से चल रही है। रायसेन जिले वा अनेकों तहसीलों में निवास करने वाले रघुवंशी समाज के परिवारों को घर घर जाकर रघुवंशी समाज आमंत्रण दे रहा है। अक्षय तृतीया पर रघुवंशी समाज के द्वारा तहसील उदयपुरा मे निर्मित रघुवंशी समाज की धर्मशाला में 30 अप्रैल को विशाल आदर्श विवाह सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। आदर्श विवाह सम्मेलन हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी रघुवंशी समाज सिलवानी की ओर से होना है। जिसमे प्रदेश के समस्त रघुवंशी समाज तहसील उदयपुरा नगर के रघुवंशी भवन में एकत्रित होकर सम्मेलन आयोजन को सफल बनायेंगे। विवाह सम्मेलन समिति के जिला अध्यक्ष पटेल रघुवर सिंह रघुवंशी ग्राम पठा, पूर्व कृषि मंडी उपाध्यक्ष मोहन मुरारी रघुवंशी ग्राम ,गोरखा पटेल सीएम,चूड़ामणि रघुवंशी,युवा जिला रघुवंशी समाज अध्यक्ष अजय पटेल पूर्व जिला जनपद सदस्य महेंद्र पटेल ग्राम वीकलपुर रिटायर्ड शिक्षक पटेल रामकृष्ण रघुवंशी ग्राम गगनबाड़ा आदि समाज के वरिष्ठ जनों द्वारा अलग-अलग टीमें बनाकर नगर तथा ग्रामीण क्षेत्रों में 30 अप्रैल को अक्षय तृतीया पर होने वाली सम्मेलन को लेकर ग्राम तथा नगर में समाज के लोगों को आमंत्रण दे रहे हैं। वहीं विवाह सम्मेलन समिति के वरिष्ठ तथा पूर्व जनपद उपाध्यक्ष वीरेंद्र रघुवंशी ने गांव मदनपुर में बैठक में कहा कि रघुवंशी समाज तब मजबूत होगी जब समाज का हर व्यक्ति एक दूसरे के साथ कंधे से कंधा मिलकर साथ चले। बिना एकता के कोई भी समाज सफलता के आयाम तक नहीं पहुंच सकती इसलिए हमें चाहिए कि हम एक जुट होकर सामाजिक धार्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रमों में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें । सम्मलेन के ब्लॉक अध्यक्ष संतोष पटेल जेतपुर ने कहा कि रघुवंशी समाज के 9 जोड़े हो गए है। आगे और रजिस्ट्रेशन होना है अधिक से अधिक और रघुवंशी समाज के जोड़ों हो सके जिसको लेकर समाज द्वारा तैयारी की जा रही है। सिलवानी रघुवंशी समाज ब्लॉक अध्यक्ष पटेल महेश सिंह रघुवंशी,पटेल विश्वनाथ सिंह रघुवंशी बीकलपुर,कांग्रेस के वरिष्ठ नेता गजेंद्र पटेल छींद जनपद सदस्य राजीव रघुवंशी छींद राजकुमार रघुवंशी हीरापुर, रघुवंशी पटेल राजीव रघुवंशी मुआर, महेश पटेल पठा युवा संगठन के कार्यकारी अध्यक्ष सुनील रघुवंशी सभी समाजजन घर घर जाकर आमंत्रण पत्र देकर विवाह सम्मेलन का आग्रह कर रहे है।

भाजपा मंडल की कार्यकरिणी घोषित

सिलवानी, देशबन्धु। भारतीय जनता पार्टी जिलाध्यक्ष राकेश शर्मा पूर्व पूर्व मंत्री ठाकुर रामपाल राजपूत एवं भाजपा मंडल अध्यक्ष श्याम साहू की सहमति से भाजपा मंडल सिलवानी की कार्यसमिति की घोषणा की गई है। नई कार्यसमिति में विभिन्न पदों पर नियुक्तियां की गई हैं, जो पार्टी के विभिन्न कार्यों और कार्यक्रमों को सुचारू रूप से चलाने में मदद करेंगी। कार्यसमिति में भाजपा मंडल उपाध्यक्ष अजमेर यादव सिलवानी, ब्रजेश शर्मा सलैया, राजकुमारी जयप्रकाश लोधी कीरतपुर, संजीव जैन जेके, पुनीत समैया सिलवानी, सुषमा नंदकिशोर साहू सांईखेड़ा को उपाध्यक्ष बनाया गया है। भाजपा मंडल महामंत्री लखन चंदेल सांई खेड़ा, मंत्री लक्ष्मी कुशवाहा सिलवानी, सरपंच सत्यपाल धाकड़ कीरतपुर मुकेश रघुवंशी कीरतपुर, सीमा चरण राठौर खमरिया मानपुर, संजय तिवारी पुर्व पाषर्द सिलवानी भूरीबाई जगदीश अहिरवार सिमरिया मंत्री बनाया गया है। भाजपा मंडल कोषाध्यक्ष ईश्वर राय सांईखेड़ा कार्यालय मंत्री के लिए ओम पाल सिलवानी, भाजपा मंडल मीडिया प्रभारी राधेश्याम साहू, सह मीडिया प्रभारी मनीष नामदेव सिलवानी को बनाया गया है। भाजपा आईटी सेल प्रभारी, कोषाध्यक्ष ईश्वर बाय साइन खेड़ा, कार्यालय मंत्री ओमपाल सिलवानी अजीम शाह, प्रवक्ता देवेन्द्र रघुवंशी डुंगरिया सहित अन्य सदस्यों की घोषणा की गई है। मंडल अध्यक्ष श्याम साहू ने कार्यसमिति के सभी पदाधिकारियों से एकजुट होकर पार्टी के विकास में योगदान देने की अपील करते हुए सभी को शुभकामनाएं दी।

ईद: देश में अमन-चैन और खुशहाली की दुआ मांगी

सांची, देशबन्धु। नगर में ईदुलफितर का त्यौहार पूरे उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर मौलाना मकसूद साहब ने ईद की विशेष नमाज अदा कराई। नमाज के बाद उन्होंने अपनी दुआ में देश में अमन-चैन, खुशहाली और तरक्की की दुआ मांगी एवं एक दूसरे को गले मिलकर मुबारकबाद दी। इसके साथ ही नगर के सभी लोगों ने एक दूसरे को इस पवित्र पर्व की मुबारकबाद दी। इसके पहले मौलाना मकसूद ने अपनी तकरीर मे त्यौहार मनाने पर विस्तार से उल्लेख किया एवं फितरा जकात सदके का महत्व समझाते हुए गरीबों की मदद करने आगे बढ़ने की हिदायत दी। उन्होंने कहा यह पर्व खुशी मोहब्बत एकता भाईचारे की मिसाल पेश करता है। इस अवसर पर हाफिज अफसर ने लोगों को कुदरत द्वारा उपलब्ध कराई सुविधाएं पानी की बचत करने एवं आवश्यकता अनुसार पानी उपयोग करने की अपील करते हुए कहा कि हमें जगह जगह पेड़ पौधे भी लगाना चाहिए इससे लोगों को छांव के साथ फल भी मिलेंगे एवं आक्सीजन की मात्रा भी बढ़ेगी। विगत दिनों कुरान मुक्म्मल होने पर हाफिज अफसर सा का स्तगबाल भी किया गया। बांसखेडा सिलवाहा में भी ईदुलफितर की नमाज अदा की गई। मुस्लिम समुदाय के लोगों ने वक्फ बिल के विरोध में हाथों पर काली पट्टी बांधकर नमाज अदा की। यह एक प्रतीकात्मक विरोध था, जिसमें उन्होंने अपनी भावनाओं को शांतिपूर्ण तरीके से प्रकट किया।

ईद की नमाज अदा कर मांगी अमन चैन की दुआ, सजदे में झुके सिर

सागर, देशबन्धु। सोमवार को ईद उल फितर मनाई जा रही है। सागर के मोतीनगर क्षेत्र स्थित ईदगाह पर ईद की विशेष नमाज अदा की गई। इसके अलावा शहर की मस्जिदों में भी ईद की नमाज पढ़ी गई। नमाज के बाद मस्जिदों से बाहर आये युवाओं, बुजुर्ग और बच्चों ने एक दूसरे के गले लगकर ईद उल फितर की मुबारकबाद दी। इस विशेष मौके पर शहर काजी और शहर मुफ्ती ने लोगों से अपील की है कि ईदगाहों और मस्जिदों में ईद उल फितर की नमाज अदा करें और पूरी खुशी और उल्लास के साथ त्योहार मनाये। त्योहार पर सुरक्षा की दृष्टि से शहर में पुलिस बल तैनात रहा है। ईद उल फितर के मौके पर सागर में विशेष नमाज मोतीनगर स्थित ईदगाह पर हुई। ईदगाह पर जगह कम पढ़ने पर समाज के लोग सागर-भोपाल मार्ग पर नमाज करने के लिये बैठे। इसके लिये एक साइड का रोड बंद रहा। विशेष नमाज होने के बाद शहर मुफ्ती तारिक अनवर ने देश समेत प्रदेश में अमन चैन, शांति और खुशहाली की दुआ मांगी। साथ ही शहर में दिन-रात पहरा देने वाली पुलिस और जिला प्रशासन समेत ईदगाह कमेटी का धन्यवाद दिया। मीठी ईद की खुशी बाजारों में भी देखने को मिली। ईद से पहले शहर के बाजार फेनी, सेवइयां से सजे हुए हैं। बाजारों में मुस्लिम समुदाय के लोग कपड़े, गहने खरीदते दिखे।

जिला शहर कांग्रेस ने ईदगाह से लौट रहे मुस्लिम भाइयो को मुबारकबाद दी

ईद के शुभ अवसर पर जिला कांग्रेस कमेटी द्वारा मोतीनगर चौराहे के पास ईदगाह से ईद की नमाज के बाद गले मिलकर बधाई दी। इस अवसर पर जिला कांग्रेस शहर अध्यक्ष राजकुमार पचौरी, पूर्व मंत्री सुरेंद्र चौधरी, पुरषोत्तम मुन्ना चौबे, चक्रेश सिंघई, सेवादल अध्यक्ष सिंटू कटारे, महेश जाटव, राहुल चौबे, अवधेश तोमर, आशीष ज्योतिषी, शैलेन्द्र तोमर, दीनदयाल तिवारी सहित अनेक कांग्रेस जनो नें मुस्लिम भाइयो से गले मिलकर ईद की मुबारकवाद दी।

ईद का दिन कौमी एकता की मिसालः सुरेन्द्र चौधरी

पवित्र माह रमजान के पूरे होने के बाद ईद उल फितर के दिन कांग्रेसजनों ने ईद की विशेष नमाज के बाद मुस्लिम भाईयों को ईद की बधाई देते हुये कौमी एकता की मिसाल कायम की। इस अवसर पर पूर्व मंत्री सुरेन्द्र चौधरी ने सदर कैन्ट क्षेत्र, कटरा जामा मस्जिद आदि अनेकों क्षेत्रों में पहुंचकर मुस्लिम भाईयों, बुजुर्गों, नौजवानों एवं बच्चों को गले मिल कर ईद की मुबारकबाद देते हुये कहा कि एक माह के रोजो के बाद ईद का दिन बड़े ही खुशी का दिन होता है इस दिन सभी वर्गों के लोग मुस्लिम भाईयों को ईद की बधाई देते है जो देश की अखण्डता और एकता के साथ कोमी एकता की मिसाल हैं। इस दौरान मुफ्ती जावेद रजा मिस्बाही, मुफ्ती वसीम निजामी मिस्बाही, अशरफ खान, नसीर बाबू, चौधरी जुल्फकार मकरानी, अबरार सौदागर आदि मौजूद थे।

चेटीचण्ड पर केक काटकर मनाया झूलेलाल साई का जन्मोत्सव

सागर, देशबन्धु। जय माता दी झूलेलाल शरण मंडली के संस्थापक लालाराम मेठवानी की ओर से चेटीचण्ड पर सिंधी कॉलोनी झूलेलाल मंदिर में सभी मंडली के सदस्यों व समाज जनों की उपस्थिति में केक काटकर भगवान झूलेलाल साईं का जन्मोत्सव मनाया। सर्वप्रथम लाल साई जी की आरती विजय लालवानी के मधुर स्वर से की गयी और मण्डली के महिला मंडल अध्यक्ष दिया राजपूत अपनी टीम मातृ शक्ति के साथ आयोलाल झूलेलाल की धुनि लगाकर झूलेलाल साई का केक काटकर जन्मोत्सव मनाया। इस मौके पर ट्रस्ट अध्यक्ष सुशील लहरवानी, महिला मंडल अध्यक्ष दिया राजपूत, लालाराम मेठवानी, सुरेश मोहनानी, राजेश मनवानी, विन्नू आहूजा, सोनू जेसवानी, अजय पंजवानी, मोनिका मेठवानी, रैना गोकलानी, मानसी दरयानी, दीपा मोटवानी, मोना जुगवानी, साक्षी हसरेजा, वर्षा हासानी सहित बड़ी संख्या में महिलायें शामिल थी।

विट्ठल मंदिर के सामने हुई गंगा आरती, श्रद्धालुओं ने धर्म लाभ लिया

सागर, देशबन्धु। निगमायुक्त राजकुमार खत्री के मार्गदर्शन में लाखा बंजारा झील को स्वच्छ और सुंदर बनाये रखने व स्वच्छता के प्रति जन जागरुकता लाने के उद्देश्य से चकराघाट स्थित विट्ठल मंदिरके सामने सोमवार को हुई गंगा आरती में शहर के विभिन्न वार्डों से बड़ी संख्या में शामिल हुये श्रद्धालुओं ने धर्म लाभ लिया।

ट्रक-ट्रैक्टर और बाइक भिड़े, दो की मौत, ओवरटेक करते समय ट्रक के सामने आई बाइक

सागर, देशबन्धु। सानौधा थाना क्षेत्र में ट्रक, ट्रैक्टर और बाइक की भिड़ंत हो गई। हादसे में बाइक सवार महिला पुरुष की मौत हो गई। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शवों को पंचनामा बनाकर पोस्टमार्टम के लिये अस्पताल भेजा है। सानौधा थाना प्रभारी भरत सिंह ठाकुर ने बताया कि ट्रैक्टर को ओवर ट्रक करते समय बाइक सामने आ गई। भारी वाहन की चपेट में आने से बाइक पर सवार महिला और पुरुष की मौत हुई है। मामले में प्रकरण दर्ज कर जांच में लिया है। वाहनों को जब्त किया गया है। चौधरी पेट्रोल पंप के सामने भूंसे से भरे ट्रैक्टर को सीमेंट से भरा ट्रक सीजी 04 पीडब्ल्यू 9815 ओवरटेक कर रहा था। रास्ते पर आगे मोड़ था। अचानक मोड़ पर ट्रक के सामने बाइक आ गई। उसे बचाने में ट्रक की ट्रैक्टर में टक्कर लगी और बाइक सवार ट्रैक्टर के नीचे आ गये। घटना में बाइक सवार महिला और पुरुष की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं ट्रैक्टर और ट्रक सड़क के नीचे उतर गये। घटना देख राहगीर और आसपास के लोग मौके पर पहुंचे। सूचना पर सानौधा पुलिस पहुंची और मामले की जांच शुरू की। प्राथमिक जांच में मृतक की पहचान उमाशंकर 29 पिता सुनील विश्वकर्मा निवासी सौरई है। महिला की पहचान नहीं हो सकी। शवों को पोस्टमार्टम के लिये भेजा है।

मकरोनिया द्रुत गति से विकास की ओर अग्रसर हो रहाः विधायक

सागर, देशबन्धु। विधायक प्रदीप लारिया ने नागरिकों के सुगम आवागमन को दृष्टिगत रखते हुये सोमवार को नपा मकरोनिया अंतर्गत वल्लभ भाई वार्ड क्र.9 में सीसी रोड लागत 16.75 लाख एवं रामलला वार्ड क्र.7 में डामरीकृत रोड लागत 5 लाख एवं शांतिपुरम पार्क निर्माण लागत 12 लाख रू. का मंत्रोच्चार के अनुगूंजन के मध्य जनप्रतिनिधि एवं वार्डवासियों की मौजूदगी में भूमिपूजन किया। इस अवसर पर विधायक ने कहा कि आज नपा क्षेत्र में 33.75 लाख रुपये के निर्माण कार्यों का श्री गणेश किया गया है। सीसी रोड का एवं डामरीकृत सड़क का निर्माण होने से वार्ड के नागरिकों को आवागमन में सुविधा मिलेगी। नगर पालिका मकरोनिया के समस्त वार्डों में लगातार विकास कार्य करने के साथ-साथ विकास कार्यों के लिये राशि स्वीकृत की जा रही है। मकरोनिया द्रुत गति से विकास की ओर अग्रसर हो रहा है। इस अवसर पर नपाध्यक्ष, पार्षद, भाजपा पदाधिकारी, कार्यकर्ता, सीएमओ मकरोनिया एवं वार्डवासी बड़ी संख्या में उपस्थिति रहे।

भाजपा की जिलास्तरीय बैठक एवं सुंदरकांड आज

सागर, देशबन्धु। भाजपा की प्रदेश स्तरीय बैठक का आयोजन सोमवार को भोपाल में किया गया। जिसमें सागर जिलाध्यक्ष श्याम तिवारी ने सहभागिता की प्रदेश स्तरीय बैठक उपरांत आज संभागीय भाजपा कार्यालय में जिलास्तरीय बैठक का आयोजन जिलाध्यक्ष श्याम तिवारी की अध्यक्षता में किया जायेगा। बैठक दोपहर 12 बजे से प्रारंभ होगी बैठक में स्थानीय प्रदेश पदाधिकारी, जिला पदाधिकारी, मंडल अध्यक्ष एवं मोर्चा अध्यक्ष शामिल होंगे। जिला मीडिया प्रभारी श्रीकांत जैन ने बताया की बैठक उपरांत शाम 4 बजे से सुंदरकांड पाठ का आयोजन किया गया है।

आरोपः आरटीओ फ्लाईंग टीम ने ड्राइवर से की मारपीट

मालथौन, देशबन्धु। एमपी यूपी मालथौन बॉर्डर पर ट्रक ड्राइवरो से गुंडा गुर्दी से अवैध वसूली चल रही हैं, मुंह पर कपड़े बांधकर लगे हुये हैं। रविवार को ट्रक ड्राइवरो ने मारपीट, धमकाने के आरटीओ अमले पर गंभीर आरोप लगाये हैं। आये दिन चेक पोस्ट अटा मालथौन में कोई नया घटनाक्रम चल रहा है सरकार आंख कान नाक बंद कर बैठी है शायद वसूली का परमिट दे डाला हैं।

आरटीओ के अमला के इतने हौसले बुलंद हैं कि वे ड्राइवरो को कूड़ा करकट समझ रही है पहले भी ड्राइवरो के साथ मारपीट एवं दुर्व्यवहार के आरोप लग चुके है पिछले दिनों 11 मार्च को परिवहन आयुक्त ग्वालियर में ट्रक ड्राइवर द्वारा अवैध वसूली, दुर्व्यवहार और वेवजह चालान करने की शिकायत की गई थी जिसे पर परिवहन आयुक्त द्वारा जांच के निर्देश दिये जांच टीम भी बनाई गई थी ऐसी खबर सामने आई थी लेकिन मामला दब गया। रविवार को आरटीओ सागर की फ्लाइंग दस्ता अटा चेक पोस्ट पर चेकिंग लगाये हुये था ट्रक मोटर वाहनों से एंट्री के नाम पर अवैध वसूली की मांगी जा रही थी और जारी है, इस दौरान जिस गाड़ी वाले ने एंट्री दे वह ठीक, जिसने इंट्री नही दी उसके साथ दुर्व्यवहार कर उस गाड़ी की फोटो खींचकर चालान कर रहे है। जबकि ऐसी गाड़ियों का चालान काट दिये जिनके दस्तावेज वैध थे और

गाड़ी भी अंडर लोडिंग थी उनके ऑनलाईन चालान काट दिये गये। आरटीओ के चैकिंग में चंबल प्राइवेट कर्मी लगे हुये जो मुंह पर कपड़ा बांधकर ट्रक ड्राइवरो से बसूली कर रहे हैं। सूत्र बतलाते है इसमे आधा दर्जन प्राइवेटकर्मी लगे हुये है इन्हें आरक्षक की वर्दी पहनाकर वसूली और चैकिंग करवाई जाती है चैकिंग के दौरान कुछ इस तरह की फोटो सामने आई हैं जिसमे प्राइवेट कर्मी मुहं पर कपड़ा बांधकर काम कर रहे है। धर्मेंद्र पांसाब निवासी पलवल, ट्रक क्र. एच आर 33 ए 8620 पलवल, पार्किंग में खड़े थी आरटीओ मालथौन के कर्मी ने आकर गाड़ी में डंडे मारपीट कर रहे थे चहेरे पर सफेद कपड़े ढके हुये थे। पार्किंग मे खड़े होकर खाना बना रहे थे, आकर बोलने लगे चलान होगा। पार्किंग में खड़ा होना जुर्म है। गाड़ी हटाने को लेकर खींचकर मारपीट की कोशिश की।

अंडर लोड़ गाड़ी को दिया चालान

ट्रक चालक एस कुमार, कल्लू सागर ने बताया कि दिल्ली से रायपुर जा रहा था, अटा चेक पोस्ट सागर पर अवैध वसूली चरम पर चल रही हैं। आरटीओ मेडम को समस्त कागज दिखाये, गाड़ी अंडर लोड़ और समस्त कागज ठीक होने के बाद भी ढाई हजार का ऑनलाइन चालान काट दिया, इन्होंने एंट्री नहीं दी तो चालान कर दिया। यहां आरटीओ की गुंडागर्दी, मनमानी चल रही है महिला अधिकारी होने का गलत फायदा उठा रही हैं चेक पोस्ट पर काला सूट और मुहं पर तौलिया बांधकर प्राइवेट लोग लगाए हुये हैं। ट्रक मोटर्स के साथ लूट मची हुई हैं।

जाम से स्थानीय रहवासी परेशान

आरटीओ की चैकिग की मनमानी से स्थानीय रहवासी परेशान है रोजाना सड़को पर पांच पांच किलोमीटर जाम लग रहा हैं उन्हें निकलने में परेशानी हो रही है हादसों का डर बना रहता है चैकिंग दौरान जाम के कारण कई हादसे हो चुके है। स्थानीय लोग बताते है चैकिंग नाम पर खुलेआम अवैध वसूली हो रही है ड्राइवरो को आरटीओ सता रहा हैं। समस्या को लेकर शासन प्रशासन को ज्ञापन देकर शिकायत भी कर चुके है लेकिन हल नहीं हुई।

यूपीएस का विरोधः आज मनेगा काला दिवस

सागर, देशबन्धु। 1 अप्रैल को संपूर्ण मप्र में काला दिवस मनाकर शाम 5 बजे ज्ञापन सौंपा जायेगा। परमानंद डेहरिया प्रांताध्यक्ष, विजय कुमार बंधु राष्ट्रीय अध्यक्ष के नेतृत्व एवं नेशनल मूवमेंट फॉर ओल्ड पेंशन स्कीम के राष्ट्रीय आह्वान पर सम्पूर्ण भारत में यूपीएस के खिलाफ काला दिवस मनाकर प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री को प्रथम नियुक्ति दिनांक से सेवा अवधि की गणना करने ग्रेज्युटी प्रदान करने एवं पुरानी पेंशन बहाल करने संबंधी ज्ञापन कलेक्टर के माध्यम से सौंपा जायेगा और शिक्षक कर्मचारी अधिकारी की स्थानीय समस्याओं का ज्ञापन कलेक्टर को सौंपा जायेगा। मोर्चा के जिलाध्यक्ष आलोक गुप्ता ने बताया कि केन्द्र सरकार ने 24 जनवरी को यूपीएस स्कीम लागू करने का नोटिफिकेशन जारी कर 1 अप्रैल से केन्द्रीय शिक्षक, कर्मचारी, अधिकारियों को यूपीएस लागू करने का निर्णय लिया है, जिसका मैमौरेन्डम पीएफआरडीए ने जारी कर दिया है। नेशनल पेंशन स्कीम से भी बदतर स्कीम यूपीएस, युनिफाईड पेंशन स्कीम हैं, जिसमें अनेक खामियां व्याप्त हैं जिसका विरोध भारत के सभी विभागों के एनपीएस धारी शिक्षक, कर्मचारी, अधिकारियों द्वारा किया जा रहा है। इतना ही नहीं बल्कि भारत के आर्थिक विशेषज्ञों ने इस स्कीम को भारत सरकार एवं शिक्षक, कर्मचारी, अधिकारी के लिये अहितकारी बताया है। इस स्कीम में कर्मचारी की जमा राशि सरकार हड़पना चाहतीं हैं, स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति पर, सेवानिवृत्ति आयु पूर्ण करने पर यह पेंशन स्कीम लागू होगी जबकि यह स्कीम शेयर मार्केट अधारित है जिसमें निवेश की जा रही राशि की कोई गारंटी नहीं है। अतः सभी विभागों के शिक्षक कर्मचारी अधिकारीगण से अपील है, अपने कर्तव्य स्थल पर काली पट्टी बांध कर ड्यूटी करे, स्वयं की शेल्फी लेकर प्रधानमंत्री को टेग कर सोसल मीडिया में शैयर करेंगे तथा आज शाम 5 बजे कलेक्टरेट में सभी शिक्षक, कर्मचारी, अधिकारी एकत्रित होकर कलेक्टर को ज्ञापन सौंपेंगे। अपीलकर्ताओं में पं. राममिलन मिश्रा, संजय श्रीवास्तव, शैलेंद्र सिंह, चुरामन रैकवार, राघवेंद्र सिंह ठाकुर, बलवंत यादव आदि शामिल है।

सरस्वती शिशु मंदिर के प्राचार्य सहित 2 आचार्य एवं 1 दीदी का सेवानिवृत्ति समारोह संपन्न

सागर, देशबन्धु। सरस्वती शिशु मंदिर लक्ष्मीपुरा के प्राचार्य प्यारेलाल प्रजापति एवं 2 आचार्य रामनरेश सोनी, गौरीशंकर मिश्रा, प्रतिभा दीदी का सेवानिवृत्ति समारोह लक्ष्मीपुरा विद्यालय प्रांगण में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि विधायक शैलेंद्र जैन, कार्यक्रम की अध्यक्षता सुनील जी देव, विशिष्ट अतिथि अरविंद हार्डीकर, मन्नालाल जैन, जयंत दुबे उपस्थित थे। विधायक जैन ने सभी सेवानिवृत्त हुये आचार्यों एवं दीदी को शाल श्रीफल और पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया। उन्होंने अपनी ओर से इन सभी को 51-51 हजार रुपये राशि देने की बात कही। इस अवसर पर विधायक जैन ने कहा कि आज के समय में जो स्थान गुरुजनों को प्राप्त है वह किसी और विधा को रखने वालों को प्राप्त नहीं है और यदि शिक्षक सरस्वती शिशु मंदिर जैसे संस्थान के हो तो उसका कोई मुकाबला ही नहीं है, क्योंकि शिशु मंदिर परिवार का शिक्षक आर्थिक रूप से भले ही कोई बड़ा आयाम न स्थापित कर पाये लेकिन वह अपने विद्यार्थियों को संस्कार से परिपूर्ण कर एक अच्छा मनुष्य बनाता है, उन्होंने कहा कि आज प्यारेलाल, गौरीशंकर, रामनरेश सोनी, प्रतिभा दीदी के त्याग और समर्पण को प्रणाम करता हूं और इन तीनों आचार्यों और दीदी को 51-51 हजार रुपये की राशि अपनी ओर से प्रदान करता हूं। इस अवसर पर विनोद दुबे, प्रवीण जोशी, पन्नालाल पटेल, शिवकुमार चौरसिया, दीपक बैसाखिया, देवीसिंह यादव, डॉ. प्रदीप पाठक सहित विद्यालय परिवार के सदस्य उपस्थित थे।

इको क्लब की गतिविधियों का किया आयोजन

सागर, देशबन्धु। शास. उच्च. माध्य. विद्यालय सदर में पर्यावरण शिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत पर्यावरण मंत्रालय के निर्देशानुसार इको क्लब की गतिविधियों का आयोजन किया गया। जिसमें प्रदर्शनी के माध्यम से छात्र छात्राओं ने प्लास्टिक, पेपर एवं अन्य उपयोगी वस्तुओं से बर्ड हाउस, वर्ल्ड फीडर बनाकर पोस्टर आदि के माध्यम से पर्यावरण जागरूकता का संदेश दिया। प्राचार्य डॉ. कल्पना शर्मा ने इको क्लब का मुख्य उद्देश्य एवं पर्यावरण संरक्षण का महत्व बताया। निर्णायक समिति में डॉ. एके बडोनिया, राजेंद्र प्रसाद अग्निहोत्री एवं अनुराग चतुर्वेदी मौजूद रहे। इको क्लब प्रभारी डॉ. रानू सोनी के निर्देशन में प्रतियोगिता का आयोजन हुआ, जिसमें आरके जैन, महेश प्रसाद दुबे, आलोक गुप्ता, शिवानी गौतम, केएल अहिरवार एवं नेहा पटेल एवं समस्त शिक्षक शिक्षिकाये उपस्थित रहें।

पुस्तक मेला कि अवधि बढ़ायी जायेः पालक महासंघ

सागर, देशबन्धु। स्वीडिश मिशन स्कूल में आयोजित पुस्तक मेला की अवधि बढ़ाने एवं पुस्तक मेला में वास्तविक रूप में पुस्तक एवं पाठ्य सामग्री, ड्रेस की उपलब्धता सुनिश्चित कराने के लिये एक पत्र पालक महासंघ ने जिलाधीश को लिखा है। उक्त पत्र जिला शिक्षा अधिकारी अरविंद जैन को प्रेषित किया पत्र में सुझावों के साथ मांग की गयी है कि पुस्तक मेले की अवधि तीन दिन और बढ़ाने का आदेश किया जाये क्योंकि वर्तमान में अभिभावकों को समुचित पाठ्य सामग्री और ड्रेस संबंधित दुकानदारों द्वारा अभिभावकों को उपलब्ध ही नहीं करायी गयी है। सभी पुस्तक विक्रेताओं को एवं स्कूली ड्रेस विक्रेताओं को विशेष तौर पर उन्हें जो निजी स्कूलों की पुस्तक, पाठ्य सामग्री एवं ड्रेस बेचने के लिये सागर शहर में जाने जाते हैं आदेशित किया जाये कि पुस्तक मेले में पुस्तकों, पाठ्य सामग्री तथा स्कूलों की ड्रेस की उपलब्धता सुनिश्चित करें इसके लिये उक्त आदेश का सख्ती से पालन कराया जाये। सभी संबंधित दुकानदारों को आदेशित किया जाये कि न्यूनतम मुनाफा लेकर उक्त सामग्री का विक्रय करें। अन्यथा कार्यवाही की जाये। पत्र जारी करते हुये डॉ. धरणेन्द्र जैन, रामदास राज, दिनेश चिरवरीया, वीरेंद्र सिंह, डॉ. अंकलेश्वर दुबे आदि ने बताया कि उक्त पुस्तक मेले से प्रशासन की मंशा के अनुसार अभिभावकों, छात्रों, छात्राओं को लाभ नहीं मिल पाया है इसलिये मेले की अवधि एवं संबंधित दुकानदारों से सख्ती आवश्यक है।

विधायक ने निर्माण होने वाले इस्कान मंदिर स्थल का निरीक्षण किया

सागर, देशबन्धु। पूरी देश दुनिया में जिस तरह से इस्कान के मंदिर बने है, इस तरह सागर में मेनपानी में मंदिर का निर्माण होने जा रहा है। सागर इस्कान के प्रमुख कृष्णार्चन प्रभु के आमंत्रण पर विधायक प्रदीप लारिया मेनपानी में इस्कान मंदिर निर्माण स्थल का निरीक्षण करने पहुंचे। कृष्णार्चन प्रभु ने बताया कि करीब 50 करोड़ की लागत से सागर के भक्तों द्वारा मंदिर का निर्माण कराया जायेगा। इस्कान मंदिर निर्माण की संभावित तिथि 30 अप्रैल होगी। इस वृहद आयोजन की व्यवस्थाओं के संबंध में एवं भूमिपूजन आयोजन में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की विशेष उपस्थिति के लिये समय प्रदान कराने विधायक लारिया से अनुरोध किया। विधायक ने यथोचित सहयोग के लिये आश्वस्त किया। इन्हीं सब व्यवस्थाओं के संबंध में कृष्णार्चन प्रभु से औपचारिक भेंट करने एवं स्थानीय ग्रामवासियों से सहयोग हेतु बात करने विधायक लारिया स्थल निरीक्षण हेतु मेनपानी पहुंचे। इस अवसर पर स्थानीय गणमान्य जन उपस्थित रहे।

श्रद्धांजलि योजनाः 75 परिवारों को मिला लाभ, कलेक्टर की संवेदनशील पहल

सागर, देशबन्धु। कलेक्टर संदीप जीआर की संवेदनशीलता और प्रभावी प्रशासनिक कार्यशैली के कारण जिले के 75 परिवार लाभान्वित हुये। इन परिवारों को अनुकंपा नियुक्ति प्राप्त होने से वे अब अपने जीवनयापन में सक्षम हो गये हैं और अपने परिवार की सभी आवश्यकताओं को पूरा करने में समर्थ हो गये हैं। एक अभिनव पहल कलेक्टर संदीप जीआर ने श्रद्धांजलि योजना के अंतर्गत शासकीय सेवा के दौरान दिवंगत हुये कर्मचारियों के परिजनों को अनुकंपा नियुक्ति प्रदान कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। इस योजना के तहत न केवल अनुकंपा नियुक्ति दी गई, बल्कि समय सीमा में मृत्यु प्रमाण पत्र, अंत्येष्टि सहायता राशि, नामांतरण, बंटवारा एवं अन्य शासकीय देयकों का त्वरित भुगतान भी सुनिश्चित किया गया। वरिष्ठ नागरिकों एवं दिवंगत कर्मियों के आश्रितों के लिये नई व्यवस्था कलेक्टर ने वरिष्ठ नागरिकों एवं सेवानिवृत्त कर्मचारियों की समस्याओं का समाधान निकालने के लिये पेंशन प्रकरणों की प्रक्रिया को सुगम बनाया। सेवानिवृत्त कर्मियों को भटकना न पड़े, इसके लिये उनकी सेवानिवृत्ति से दो माह पूर्व ही उनके पेंशन प्रकरण तैयार कराये गये और पीपीओ पेंशन भुगतान आदेश कलेक्टर कार्यालय से निर्धारित दिनांक पर वितरित किया गया। इससे सेवानिवृत्त कर्मचारियों को सम्मान भी मिला और अनावश्यक परेशानियों से मुक्ति भी। अनुकंपा नियुक्ति के लिये प्रभावी क्रियान्वयन इस योजना के सुचारू क्रियान्वयन के लिये जिले में एक नोडल अधिकारी नियुक्त किया गया एवं सभी विभागों को निर्देश दिये गये कि वे प्रतिमाह आरक्षण रोस्टर के अनुसार रिक्त पदों की जानकारी प्रदान करें। अनुकंपा नियुक्ति की पात्रता रखने वाले दिवंगत

कर्मचारियों के परिजनों को अपने आवेदन कलेक्ट्रेट में प्रस्तुत करने का निर्देश दिया गया। इसके उपरांत इन आवेदनों की जांच कर उन्हें संबंधित विभागों में भेजा गया, जहां आवश्यकतानुसार त्वरित नियुक्तियां दी गई।

समाज में सकारात्मक प्रभाव श्रद्धांजलि योजना के सफल क्रियान्वयन से समाज में सकारात्मक प्रभाव देखा गया। इस योजना के माध्यम से न केवल दिवंगत कर्मचारियों के परिवारों को आर्थिक संबल मिला, बल्कि शासकीय विभागों में रिक्त पद भरने से कार्यक्षमता और गुणवत्ता भी बढ़ी। कलेक्टर संदीप जीआर की इस संवेदनशील पहल से यह सुनिश्चित हुआ कि दिवंगत कर्मचारियों के परिवारों को सरकारी सहायता त्वरित रूप से मिले और वे अपने जीवन को नये सिरे से संवार सकें।

श्रद्धांजलि योजना के तहत कुल 75 नियुक्तियां प्रदान की गईं

शिक्षा विभागः सहायक ग्रेड.3 के 3 पद, भृत्य के 19 पद

जिला पंचायतः ग्राम पंचायत सचिव के 18 पद।

नगर निगमः सफाई संरक्षक के 15 पद, भृत्य के 3 पद, सफाई दरोगा के 2 पद।

राजस्व विभागः सहायक ग्रेड.3 के 3 पद, भृत्य के 2 पद।

जेल विभागः जेल प्रहरी के 4 पद।

महिला एवं बाल विकास विभागः सहायक ग्रेड.3 के 3 पद।

सामाजिक न्याय एवं निशक्तजन कल्याण विभागः सहायक ग्रेड.3 के 3 पद।

इस प्रकार कुल 75 मृतक शासकीय सेवकों के परिजनों को अनुकंपा नियुक्ति दी गई, जिससे उनके परिवारों को आर्थिक सुरक्षा मिली।

स्वामी पत्रकार प्रकाशन प्रा.लि.के लिए प्रकाशक गिरिराज चाचा मुद्रक गिरिराज चाचा द्वारा दैनिक भास्कर प्रेस (डी बी कार्प लि.) प्लाट नं. 36 इंडस्ट्रीयल एरिया सागर म.प्र. सागर से मुद्रित एवं 56 अग्रवाल बिल्डिंग एक्सिस बैंक के पीछे 10 सिविल लाईन्स, सागर मप्र से प्रकाशित, संपादकः पलाश सुरजन, कार्यकारी संपादकः ज़ाकिर अली*
प्रबंध संपादक डॉ. योगेश दत्त तिवारी फोन 07582-228742 ई-मेल. deshbandhusgr@yahoo.in प्रेस पंजीयन- MPHIN/2016/69061 समाचार चयन के लिए पी.आर.बी. एक्ट के तहत जिम्मेदार।